

वैश्विक बैंकिंग - हाल की गतिविधियां और भावी परिदृश्य*

वैश्विक वृद्धि एवं व्यापार में मंदी के मद्देनजर, हाल के वर्षों में वैश्विक बैंकिंग प्रणाली बहुत सी चुनौतियों से जूझती रही। वैश्विक बैंकिंग गतिविधि के व्यापक पुनरुज्जीवन का इंतजार अभी भी है क्योंकि कुछ उन्नत अर्थव्यवस्थाओं और भारत सहित अधिकांश उभरती अर्थव्यवस्थाओं की बैंकिंग प्रणालियों के निष्पादन पर निम्न लाभप्रदता और आस्ति गुणवत्ता के कमजोर होने की मार पड़ी है। इन चिंताओं के बावजूद, उभरती अर्थव्यवस्थाओं ने वैश्विक बैंकिंग प्रणाली में अपनी स्थिति को मजबूत करना जारी रखा। सकारात्मक पक्ष को देखा जाए तो, वैश्विक वित्तीय संकट के बाद से उठाए गए विभिन्न विनियामकीय/पर्यवेक्षीय सुधारों से वैश्विक बैंको की पूंजीगत स्थिति को मजबूत बनाने में मदद मिली है।

I. प्रस्तावना

वैश्विक वित्तीय संकट एवं आसन्न कर्ज संकट ने वैश्विक बैंकिंग प्रणाली की कमजोरियों और वैश्विक अर्थव्यवस्था पर वास्तविक, वित्तीय और भरोसे के माध्यम से पड़ने वाले विपरीत प्रभावों को प्रत्यक्ष लाकर खड़ा कर दिया है। इसके अलावा, इन्होंने वैश्विक स्तर पर विनियामकीय और पर्यवेक्षी सहयोग की जरूरत को भी रेखांकित किया है। तब से, राष्ट्रीय और बहु-पक्षीय -दोनों स्तर पर कार्रवाई के बहुत से परिदृश्य देखे गए हैं। वर्ष 2016 तक कुछ नई चिंताएं उभर कर आ चुकी हैं।

वैश्विक वृद्धि एवं कारोबार के मंदी के दौर में वैश्विक बैंकिंग प्रणाली विनियामकीय/पर्यवेक्षी सुधारों; वैश्विक बैंकों की पूंजीगत स्थिति में सुधार; वैश्विक बैंकिंग की सुस्त गतिविधि; ऋण वृद्धि की मंद गति, लाभप्रदता में कमी; और आस्ति

* यह लेख भारतीय रिज़र्व बैंक, आर्थिक एवं नीति अनुसंधान विभाग के बैंकिंग अनुसंधान प्रभाग की श्रीमती रेखा मिश्रा के मार्गदर्शन में डॉ. राजमाल, डॉ. पल्लवी चवाण, श्री राधेश्याम मिश्रा एवं श्रीमती अन्वेष्णा दास ने तैयार किया गया है। इस लेख में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। ये विचार भारतीय रिज़र्व बैंक के मत का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं।

श्री बी. एम. मिश्रा, प्रधान परामर्शदाता, आर्थिक और नीति अनुसंधान विभाग, भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा प्रकाशन हेतु प्राधिकृत।

गुणवत्ता संबंधी चिंताओं के परीक्षण और पीड़ा के मिलेजुले दौर से गुजर रही है।

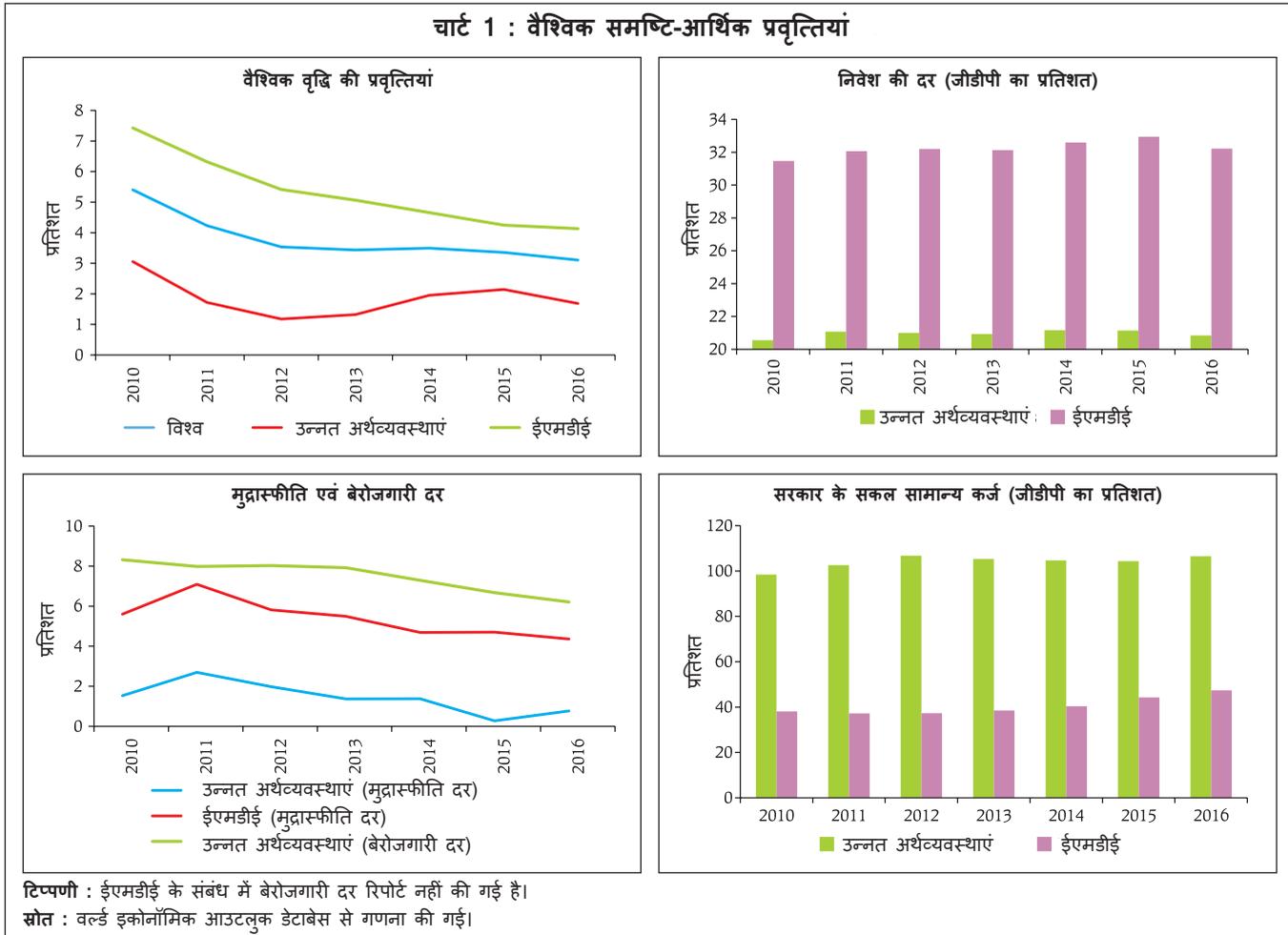
इस लेख में वैश्विक बैंकिंग प्रणाली की वृद्धि एवं सेहत की समीक्षा और वैश्विक विनियामकीय सुधारों के संबंध में हुई प्रगति का विश्लेषण किया गया है। व्यापक रूप से 2010 के दशक पर ध्यान केंद्रित किया गया है, जिसमें वर्ष 2016 पर अधिक विस्तृत विचार-विमर्श किया गया है। शेष लेख को निम्नानुसार पेश किया गया है। लेख के दूसरे खंड में वैश्विक आर्थिक प्रवृत्तियों के मद्देनजर, चुनिंदा उन्नत अर्थव्यवस्थाओं (एई) एवं उभरते बाजारों वाली विकासशील अर्थव्यवस्थाओं (ईएमडीई) से संबंधित मजबूती और लाभप्रदता के सामान्य सूचकों का प्रयोग करते हुए बैंकिंग निष्पादन का विश्लेषण किया गया है। तीसरे खंड में, विशिष्ट प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं/आर्थिक समूहों की बैंकिंग प्रणालियों के निष्पादन का मूल्यांकन किया गया है। शीर्ष 100 वैश्विक बैंकों के निष्पादन को खंड चार में प्रस्तुत किया गया है। प्रमुख विनियामकीय एवं पर्यवेक्षी नीतिगत पहल की चर्चा खंड पांच में की गई है। खंड छह में उपसंहार तथा भविष्य की संभावनाओं का जिक्र है।

II. वैश्विक बैंकिंग प्रवृत्ति

बृहत्-वित्तीय जोखिम बने रहे

2016 में वैश्विक अर्थव्यवस्था की वृद्धि मंद रही, जो उन्नत अर्थव्यवस्थाओं और उभरते बाजारों वाली विकासशील अर्थव्यवस्थाओं -दोनों में देखी गई। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) द्वारा अप्रैल 2017 में जारी विश्व आर्थिक संभावना में वैश्विक आर्थिक वृद्धि 3.1 प्रतिशत रिपोर्ट की गई, जो 2015 में दर्ज वृद्धि की तुलना में कम रही। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं और उभरते बाजारों वाली विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि क्रमशः 1.7 प्रतिशत एवं 4.1 प्रतिशत रही। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में बेरोजगारी की दर में 2016 में कमी होने के बावजूद पण्य मूल्यों के अपेक्षाकृत अधिक होने के कारण इन अर्थव्यवस्थाओं में मुद्रास्फीति में वृद्धि होती रही है। हालांकि, उभरते बाजारों वाली विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में यह दबाव थोड़ा कम हुआ। सरकार के सामान्य तुलन पत्रों में कर्ज का हिस्सा उच्च स्तर पर बना रहा। हालांकि, अमेरिका के नीतिगत रुझान से जुड़ी अनिश्चितताओं और वैश्विक अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले इसके असर के मद्देनजर भविष्य की आर्थिक संभावनाओं के बारे में अनिश्चितता बनी रही (चार्ट 1)।

चार्ट 1 : वैश्विक समष्टि-आर्थिक प्रवृत्तियां



सभी एई एवं ईएमडीई के अंतर्गत ऋण वृद्धि के भिन्नता भरे पैटर्न

सभी अर्थव्यवस्थाओं के अंतर्गत ऋण वृद्धि की प्रवृत्ति में भिन्नता भरे पैटर्न देखे गए, जिसके तहत भिन्न-भिन्न वृद्धि एवं बैंक तुलन पत्र में सुधार की अलग-अलग स्थितियों का पता चलता है। तथापि, 2016 में सामान्य रूप से अधिकांश अर्थव्यवस्थाओं के अंतर्गत ऋण वृद्धि में मंदी आई। अमेरिका, जर्मनी एवं फ्रांस जैसी उन्नत अर्थव्यवस्थाओं ने अपनी ऋण वृद्धि बरकरार रखा किंतु यूके एवं जापान की वृद्धि में कुछ लचीलापन देखा गया। स्पेन और पुर्तगाल में कमी का दौर जारी रहा।

ईएमडीई के मध्य, भारत और रूस में बड़े ऋणों की चूक का ऋण वृद्धि पर हानिकारक असर पड़ा। हाल के महीनों में ब्राजील की ऋण वृद्धि में कमी आई। तथापि, चीनी कॉर्पोरेटों

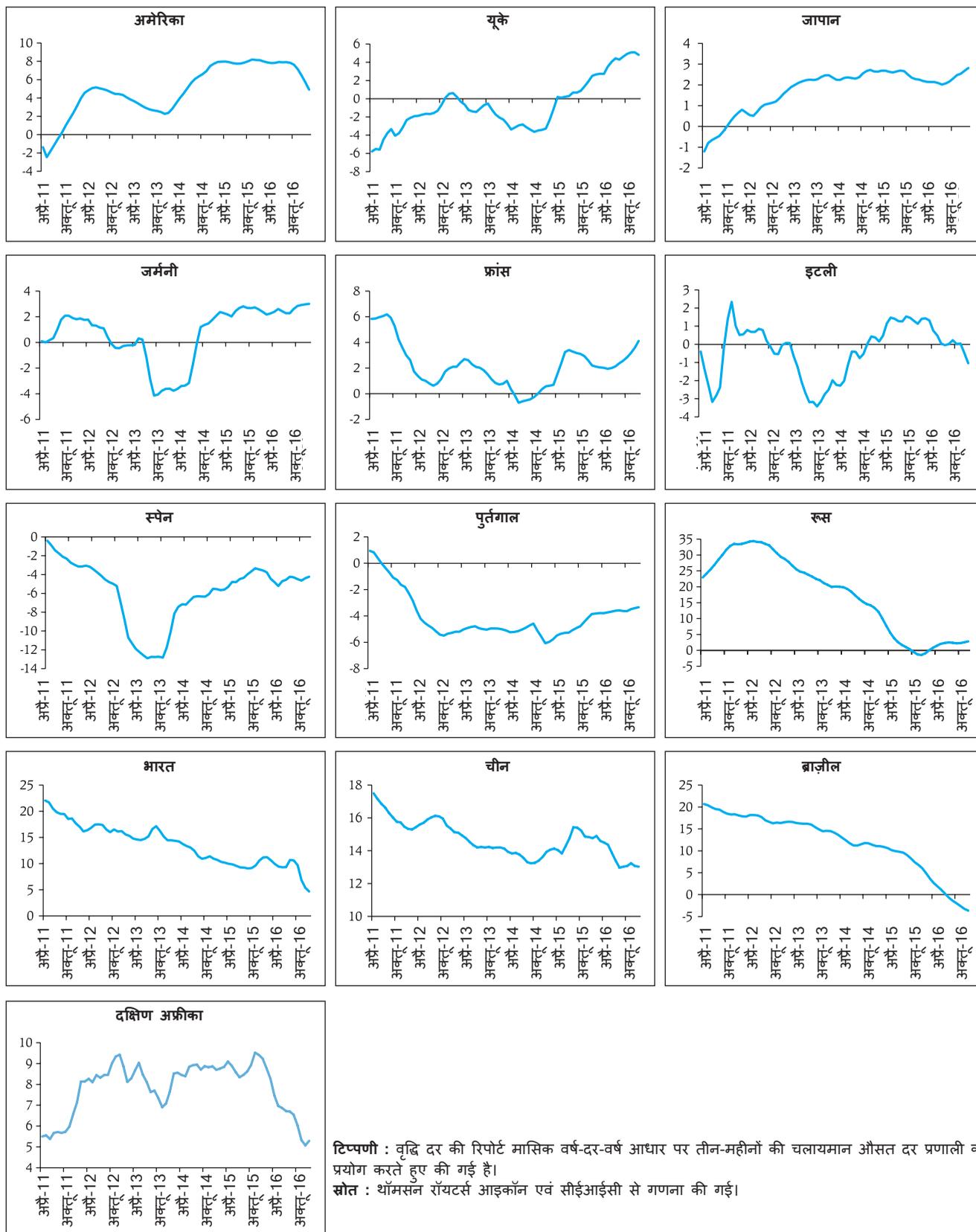
की पहले से विद्यमान उच्च लिवरेज की स्थिति को देखते हुए चीन की अत्यधिक ऋण वृद्धि जारी रही जो 10 प्रतिशत से अधिक रही (चार्ट 2)। ऋण वृद्धि की इन कमजोर करने वाली प्रवृत्तियों के मद्देनजर, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की वैश्विक वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट - अक्टूबर 2016 में इन अर्थव्यवस्थाओं के लिए कमजोर पड़ चुके कॉर्पोरेट तुलन पत्रों को सुगमतापूर्वक डिलिवरेज करने के साथ ही ऋण वृद्धि की बहाली को चुनौती के रूप में चिह्नित किया है, जिसका निकट भविष्य में इन अर्थव्यवस्थाओं की वृद्धि-संभावनाओं पर प्रभाव पड़ेगा।

आस्तियों पर प्रतिलाभ निम्न स्तर पर बना रहा

आस्तियों पर प्रतिलाभ (आरओए)¹ के निम्न स्तर पर होने से ज्ञात होने वाली कमजोर ऋण वृद्धि से वृद्धि को सहारा प्रदान करने एवं प्रतिकूल आर्थिक चक्रों के माध्यम से पूंजी

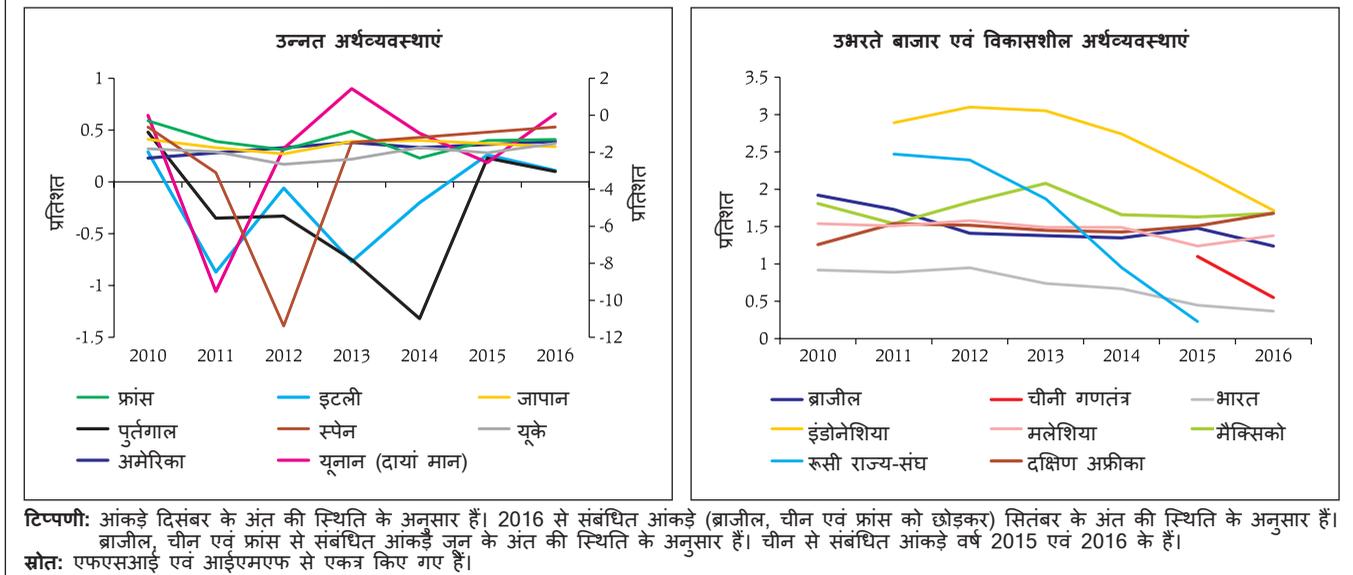
¹ औसत कुल आस्तियों की तुलना में निवल लाभ अनुपात।

चार्ट 2 : बैंक ऋण वृद्धि का तीन महीनों के दौरान लिया गया चलायमान औसत, प्रतिशत रूप में



टिप्पणी : वृद्धि दर की रिपोर्ट मासिक वर्ष-दर-वर्ष आधार पर तीन-महीनों की चलायमान औसत दर प्रणाली का प्रयोग करते हुए की गई है।
स्रोत : थॉमसन रॉयटर्स आइकॉन एवं सीईआईसी से गणना की गई।

चार्ट 3 : चुनिंदा अर्थव्यवस्थाओं से संबंधित बैंकों की आस्तियों पर प्रतिलाभ



स्तरों को बनाए रखने की बैंकों की क्षमता पर और अधिक प्रभाव पड़ने की संभावना है। एई के मध्य देखा जाए तो अमेरिका और यूके के बैंकों की आस्तियों पर प्रतिलाभ में हाल के वर्षों में थोड़ा सुधार हुआ है। यूरो-क्षेत्र की परिधि में आने वाली अर्थव्यवस्थाओं, जैसे ग्रीस, इटली, पुर्तगाल एवं स्पेन के बैंकों की आस्तियों पर प्रतिलाभ में वृद्धि रिपोर्ट की गई है, जो पहले ऋणात्मक स्तर पर हुआ करता था। ईएमडीई के मध्य देखा जाए तो दबावपूर्ण आस्तियों के बड़े बोझ के कारण रूस एवं भारत के बैंकों की आस्तियों पर प्रतिलाभ में काफी गिरावट आई। चीनी बैंकों की आस्तियों पर प्रतिलाभ में भी तेजी से गिरावट आई। इंडोनेशियाई बैंकों की लाभप्रदता के आंकड़ों में ऋण लागत बढ़ने के कारण हाल के वर्षों में निरंतर गिरावट आई है। हालांकि, ईएमडीई के अन्य बैंकों की तुलना में उनकी लाभप्रदता उच्च स्तर पर बनी रही (चार्ट 3)।

पूँजी पर्याप्तता स्थिर रही

प्रमुख देशों के बैंकों की पूँजी पर्याप्तता, जो जोखिम-भारित आस्तियों की तुलना में विनियामकीय पूँजी अनुपात के रूप में परिभाषित है, की स्थिति सितंबर 2016 के अंत की स्थिति में पिछले वर्ष की समरूप तिमाही की तुलना में स्थिर रही। 2010 से, अमेरिका को छोड़कर अन्य उन्नत अर्थव्यवस्थाओं की पूँजीगत स्थिति में लगातार सुधार हुआ है, जिसका कारण

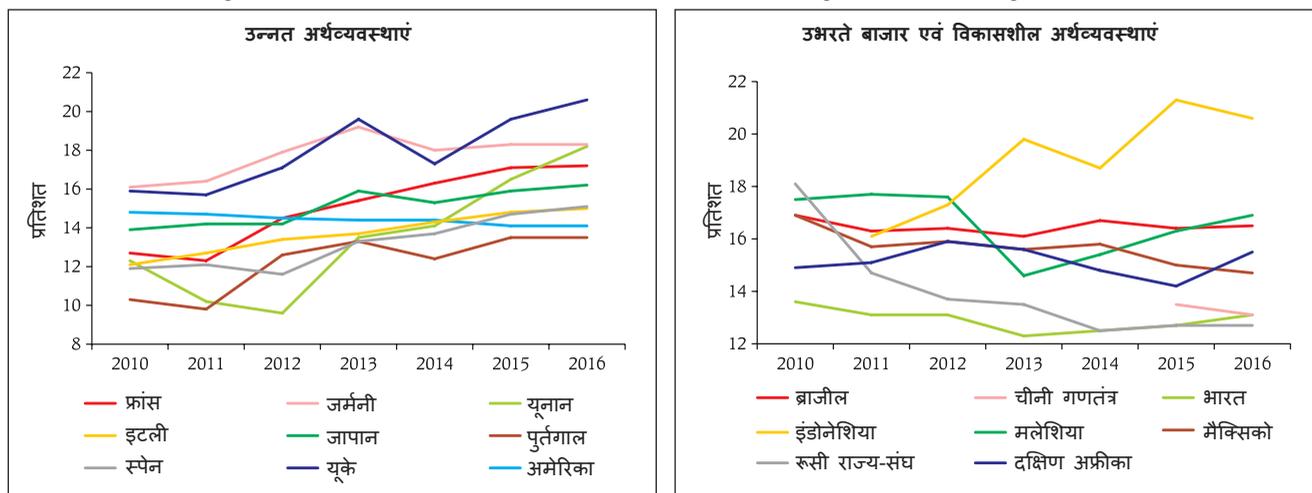
पूँजीगत अपेक्षाओं का मजबूत होना तथा धीरे-धीरे बासेल III को लागू किया जाना माना जा सकता है। हालांकि, रूस और मैक्सिको जैसी ईएमडीई से संबंधित पूँजीगत स्थितियां या तो खराब हुई हैं या अपरिवर्तित रही हैं, जिसका कारण बैंकिंग क्षेत्र के विभिन्न मुद्दों को माना जा सकता है। जिनके कारण इन देशों के बैंकों को अपेक्षाकृत उच्च स्तर पर पूँजीगत बफर तैयार करने में बाधा उत्पन्न हुई। भारत में पूँजी पर्याप्तता की स्थिति में थोड़ा सुधार देखा गया, हालांकि यह स्थिति अधिकांश प्रमुख ईएमडीई की तुलना में निम्न स्तर पर रही (चार्ट 4)।

ईएमडीई में सुधार के साथ लिवरेज अनुपात में भिन्नता की प्रवृत्ति

लिवरेज अनुपात² जोखिम-आधारित पूँजी पर्याप्तताओं के विश्वसनीय अनुपूरक उपाय के रूप में कार्यशील है और इसके माध्यम से बैंकिंग क्षेत्र में लिवरेज की स्थिति में रोक लगाने की कोशिश की जाती है। बासेल III के मानकों के अंतर्गत कम से कम 3 प्रतिशत का लिवरेज अनुपात अनिवार्य किया गया है। 2010 से, एई और ईएमडीई - दोनों की दीर्घावधिक प्रवृत्तियों से बासेल III ढांचे के अंतर्गत विनियामकीय अनिवार्यताओं के कारण लिवरेज अनुपात में सुधार का पता चलता है (चार्ट 5)।

² आस्तियों की तुलना में पूँजी अनुपात

चार्ट 4 : चुनिंदा अर्थव्यवस्थाओं में जोखिम भारित आस्तियों की तुलना में पूंजी अनुपात (सीआरएआर)



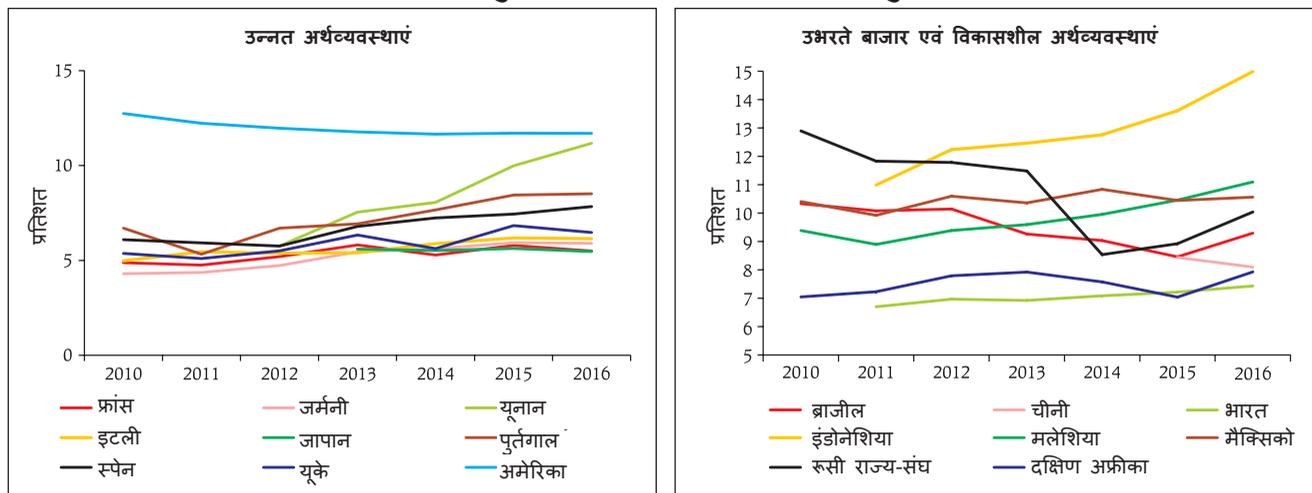
टिप्पणी : आंकड़े दिसंबर के अंत की स्थिति के अनुसार हैं। 2016 से संबंधित आंकड़े (ब्राजील, चीन एवं फ्रांस को छोड़कर) सितंबर के अंत की स्थिति के अनुसार हैं। ब्राजील, चीन एवं फ्रांस से संबंधित आंकड़े जून के अंत की स्थिति के अनुसार हैं। चीन से संबंधित आंकड़े वर्ष 2015 एवं 2016 के हैं।
स्रोत : एफएसआई एवं आईएमएफ से एकत्र किए गए हैं।

अधिकांश ईएमडीई की आस्ति गुणवत्ता में गिरावट

यूरो-क्षेत्र की परिधि के अंतर्गत आने वाली अर्थव्यवस्थाओं का अनर्जक ऋण (एनपीएल) अनुपात³ प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं से काफी उच्च स्तर पर बना रहा। भारत, रूस, इंडोनेशिया एवं ब्राजील सहित अधिकांश ईएमडीई के एनपीएल अनुपात में वृद्धि की सामान्य प्रवृत्ति देखी गई (चार्ट 6)। इन देशों में आस्ति

गुणवत्ता में गिरावट आने के बहुत से कारण थे, यथा - भारत के मामले में क्षेत्र विशेष की समस्याएं, ब्राजील और रूस के मामले में आर्थिक कमजोरी और चीन⁴ के मामले में कॉर्पोरेट लिवरेज का अतिरेक। बैंकों की आस्ति गुणवत्ता में गिरावट का बैंकों की ऋण प्रदान करने की क्षमता पर विपरीत असर पड़ता है, उनकी लाभप्रदता कम हो जाती है, उनकी बैंक पूंजी का

चार्ट 5 : चुनिंदा अर्थव्यवस्थाओं में लिवरेज अनुपात

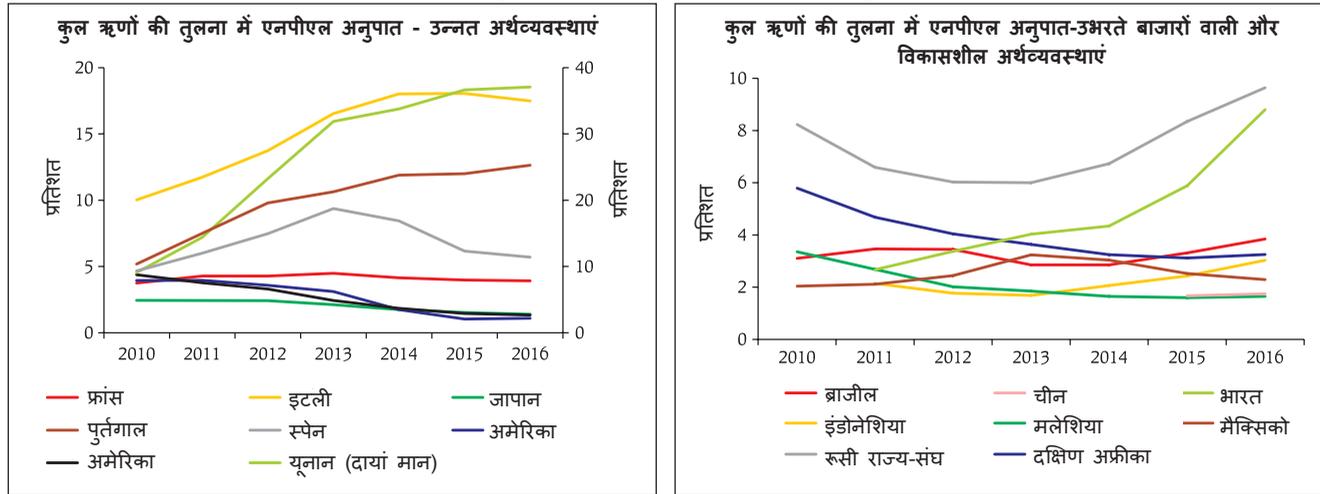


टिप्पणी : आंकड़े दिसंबर के अंत की स्थिति के अनुसार हैं। 2016 से संबंधित आंकड़े (ब्राजील, चीन एवं फ्रांस को छोड़कर) सितंबर के अंत की स्थिति के अनुसार हैं। ब्राजील, चीन एवं फ्रांस से संबंधित आंकड़े जून के अंत की स्थिति के अनुसार हैं। चीन से संबंधित आंकड़े वर्ष 2015 एवं 2016 के हैं।
स्रोत : एफएसआई एवं आईएमएफ से एकत्र किए गए हैं।

³ कुल ऋण की तुलना में एनपीएल अनुपात

⁴ वैश्विक वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट, अप्रैल 2017, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष।

चार्ट 6 : चुनिंदा अर्थव्यवस्थाओं में आस्ति गुणवत्ता



टिप्पणी : आंकड़े दिसंबर के अंत की स्थिति के अनुसार हैं। 2016 से संबंधित आंकड़े (ब्राजील, चीन एवं फ्रांस एवं इटली को छोड़कर) जून के अंत की स्थिति के अनुसार हैं। ब्राजील, चीन एवं फ्रांस एवं इटली से संबंधित आंकड़े जून के अंत की स्थिति के अनुसार हैं। चीन से संबंधित आंकड़े वर्ष 2015 एवं 2016 के हैं।
स्रोत : एफएसआई एवं आईएमएफ से एकत्र किए गए हैं।

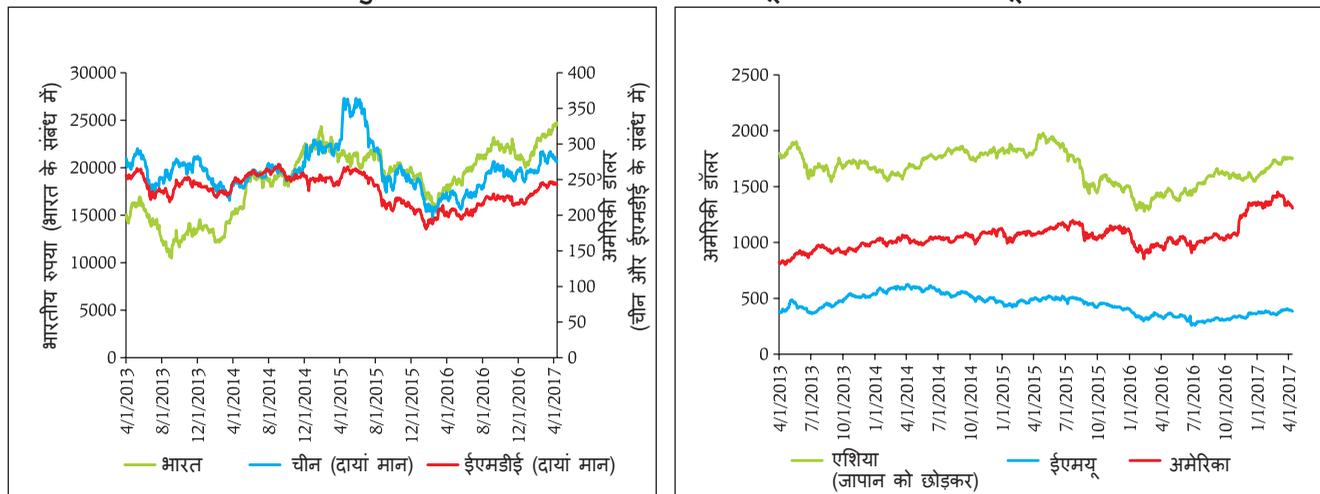
क्षरण होता है और इसके कारण इन अर्थव्यवस्थाओं के समक्ष चुनौती उत्पन्न हो सकती है।

बैंक के शेयर सूचकांकों में जबर्दस्त तेजी आई

बैंक की लाभप्रदता, बाजार के रुख एवं सामान्य आर्थिक वातावरण के सूचक माने जाने वाले बैंक के शेयर सूचकांक में 2016 की दूसरी छमाही में अमेरिका में 30 प्रतिशत से अधिक वृद्धि हुई, जिसके कारण निम्नलिखित हैं - अमेरिकी बैंकों की

लाभप्रदता में सुधार होना, फेड द्वारा दरों में अधिक बार वृद्धि किया जाना और डॉड-फ्रैंक वाल स्ट्रीट सुधारों एवं उपभोक्ता संरक्षण कानून में संशोधन की संभावनाएं। यूरो-क्षेत्र के अंतर्गत 2016 की पहली छमाही में बैंक शेयर सूचकांक में गिरावट आई किंतु वर्ष के उत्तरार्द्ध में इनमें सुधार हुआ। 2016 के दौरान बैंकों और उभरते बाजारों की बिक्री का निष्पादन कमजोर रहने के कारण ईएमडीई के बैंक शेयरों पर प्रतिलाभ ठंडा (बहुत कम) रहा (चार्ट 7)।

चार्ट 7 : चुनिंदा अर्थव्यवस्थाओं/अर्थव्यवस्था समूहों में बैंकों के शेयर सूचकांक



टिप्पणी : ईएमयू से तात्पर्य यूरोपियन मॉडिक संघ से है।
स्रोत : थॉमसन रॉयटर्स, डेटा स्ट्रीम से एकत्र किए गए हैं।

यूरो-क्षेत्र में सीडीएस स्प्रेड उच्च स्तर पर बना रहा

ऋण जोखिम प्रबंध के लिए सरकारी ऋण-चूक की अदला-बदली (सीडीएस) महत्वपूर्ण जरिया है जो सरकारी कर्ज पर होने वाली हानि से निवेशकों की रक्षा करता है। दबाव की अवधि के दौरान बांड स्प्रेड की तुलना में सीडीएस स्प्रेड में नई सूचनाएं अधिक तेजी से प्रकट हुईं (आईएमएफ-जीएफएसआर, अप्रैल 2013)।

यूरो-क्षेत्र की परिधि पर स्थित अर्थव्यवस्थाओं का सरकारी सीडीएस स्प्रेड उच्च स्तर पर बना रहा, जो उन अर्थव्यवस्थाओं की कमजोरियों के कारण था। जून 2016 में, यूके और यूरोपीय संघ (ईयू) के बैंकों के बैंक-सीडीएस स्प्रेड में तेजी से वृद्धि हुई, जिसका कारण जून 2016 में यूके में हुए जनमत संग्रह, जो ब्रेक्सिट के नाम से प्रसिद्ध हुआ, का परिणाम रहा। हालांकि,

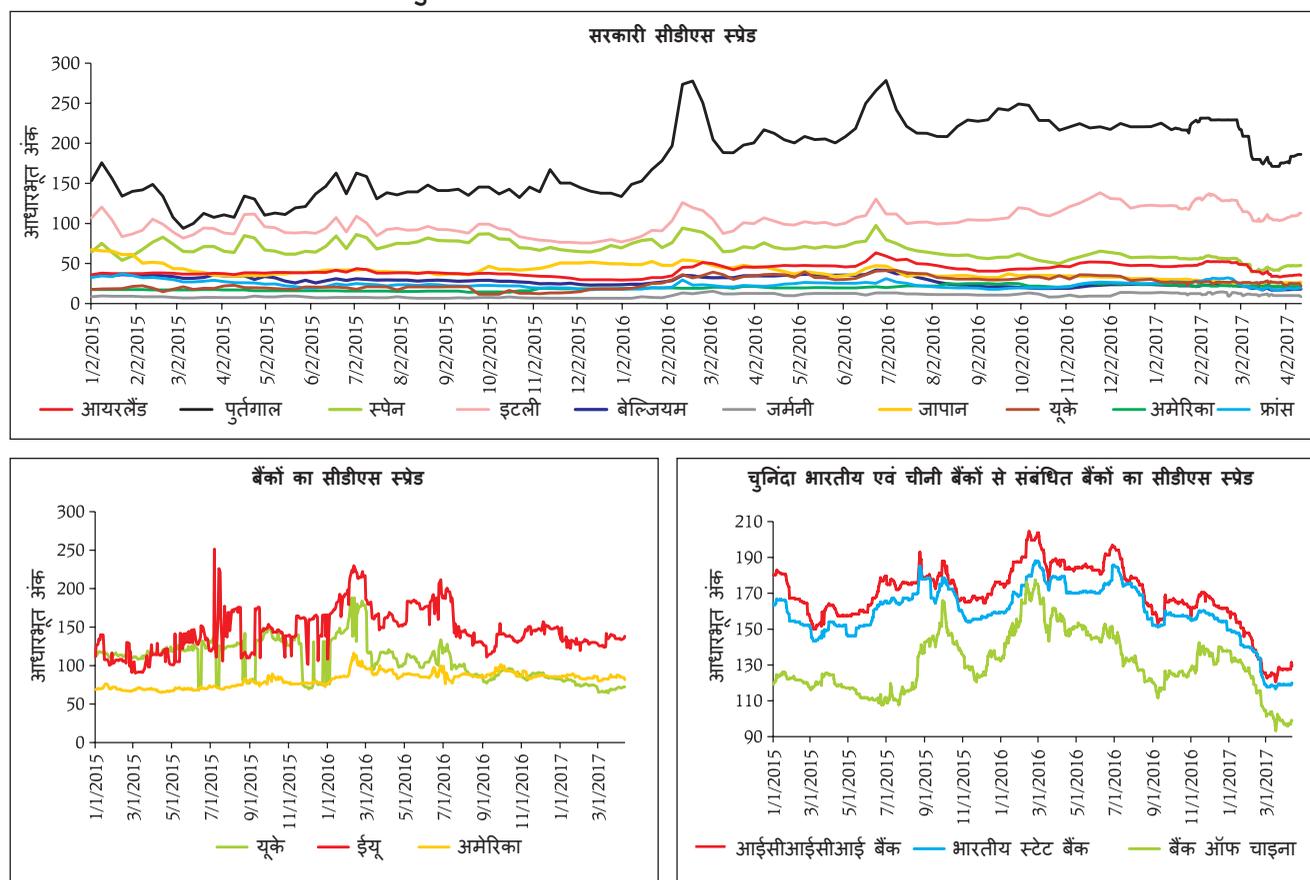
बाद में इसमें कमी आई। यूरो-क्षेत्र के बैंक स्प्रेड अमेरिका और यूके की तुलना में उच्च स्तर पर रहे। प्रमुख भारतीय बैंकों, नामतः भारतीय स्टेट बैंक एवं आईसीआईसीआई बैंक के सीडीएस स्प्रेड में बैलेंस सीट क्लीनअप के अग्रसक्रिय कदम उठाए जाने के बाद जुलाई 2016 से कमी देखी गई। हालांकि, हाल के महीनों के दौरान आईसीआईसीआई बैंक के सीडीएस स्प्रेड में सुधार देखा गया (चार्ट 8)।

III. चुनिंदा विकसित क्षेत्रों एवं देशों में बैंकिंग की प्रवृत्तियां

i) अमेरिकी बैंकिंग प्रणाली - बहाली के संकेत

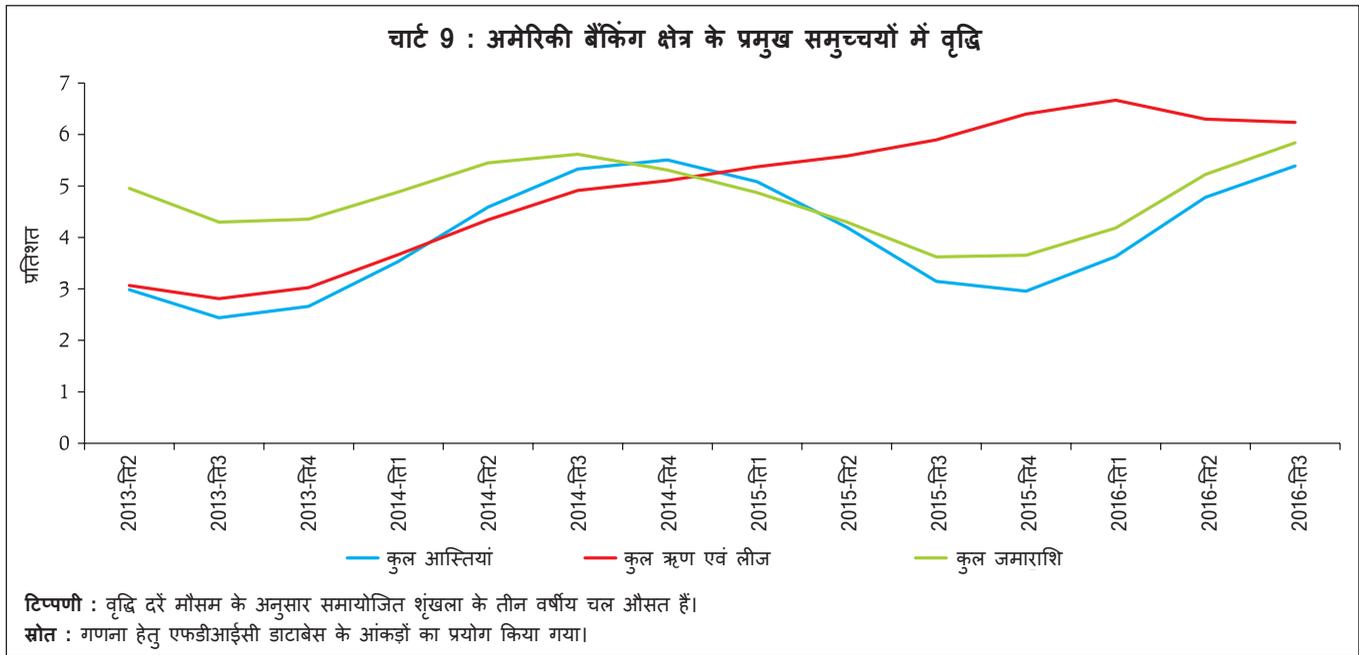
वैश्विक वित्तीय संकट के अनुगामी जोरदार झटके के बाद अमेरिका में बैंक ऋण वृद्धि 2011 की तीसरी तिमाही से प्रारंभ होकर 2016 की शुरुआत तक जारी रही। हालांकि, 2016⁵ की दूसरी और तीसरी तिमाही में यह वृद्धि कुछ मंद

चार्ट 8 : चुनिंदा अर्थव्यवस्थाओं में सरकारी एवं बैंकों के सीडीएस स्प्रेड



स्रोत : थॉमसन रॉयटर्स आइकॉन।

⁵ अलग से उल्लेख नहीं किया गया हो तो इस लेख में वर्ष से तात्पर्य कैलेंडर वर्ष है।

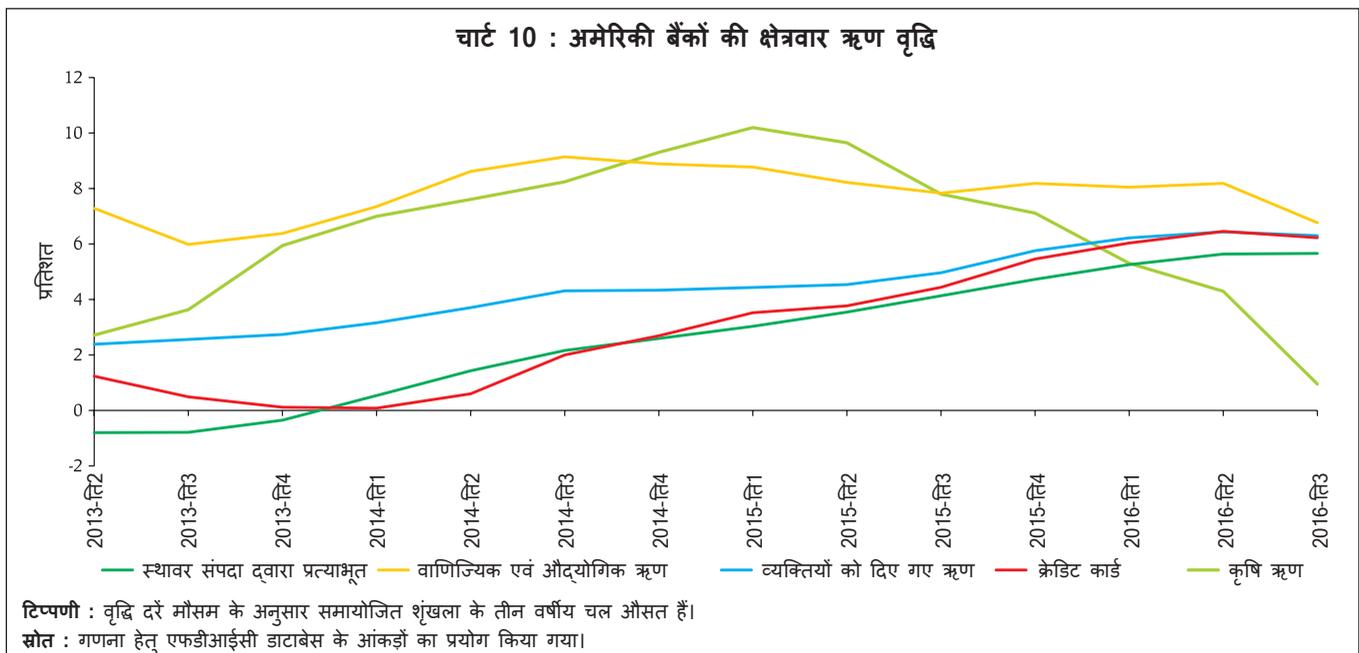


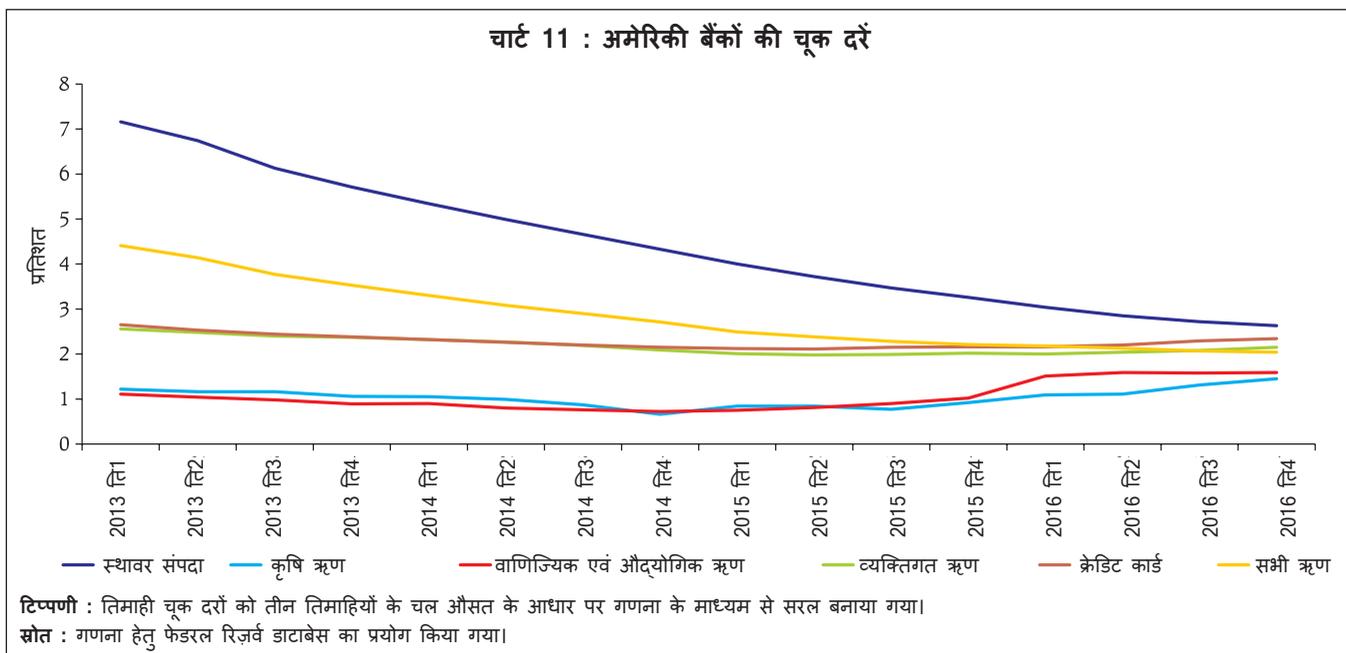
हुई। इस बढ़ती प्रवृत्ति के अनुरूप 2016 में बैंक जमाराशियों में भी वृद्धि देखी गई, किंतु जमाराशि में वृद्धि स्पष्ट रूप से ऋण की अपेक्षा कम रही (चार्ट 9)।

विस्तृत आधार के साथ ऋण वृद्धि का पुनरुज्जीवन

वैश्विक वित्तीय संकट की शुरुआत के साथ ही प्रत्येक क्षेत्र/हिस्से को प्राप्त होने वाले ऋण पर आघात पड़ा, किंतु वाणिज्यिक एवं औद्योगिक क्षेत्र, तथा स्थावर संपदा द्वारा

प्रत्याभूत ऋण पर सबसे बुरा असर पड़ा। संकट के बाद हुई बहाली का आधार सामान्य रूप से विस्तृत रहा जिसके अंतर्गत उक्त क्षेत्रों सहित सभी ऋण प्राप्त-कर्ता क्षेत्रों में वृद्धि हुई। हालांकि, 2012 की तीसरी तिमाही के बाद, वाणिज्यिक और औद्योगिक क्षेत्र की अधिक वृद्धि हुई। यद्यपि, अन्य क्षेत्रों की तुलना में यह वृद्धि अधिक रही। इसके विपरीत, स्थावर संपदा द्वारा प्रत्याभूत ऋण में वृद्धि जारी रही (चार्ट 10)। इस अवधि





के दौरान खुदरा ऋण में भी मजबूत वृद्धि हुई। उपभोक्ता के विश्वास में वृद्धि होने और बेरोजगारी में कमी के तुरंत बाद 2016 में खुदरा ऋण में वृद्धि जारी रही।

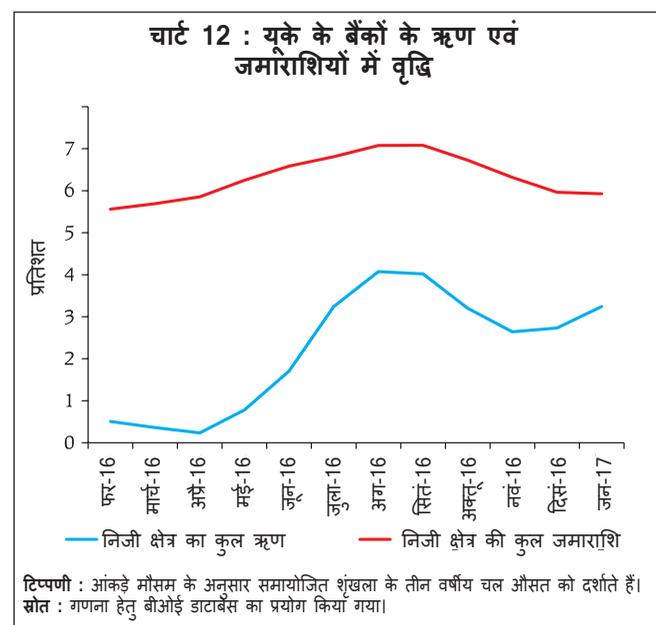
एनपीएल में कमी की प्रवृत्ति

संकट-पश्चात अमेरिकी बैंकिंग प्रणाली का सबसे कमजोर हिस्सा एनपीएल, विशेषरूप से स्थावर संपदा क्षेत्र से संबंधित, रहा है। अनुगामी वर्षों में इसमें लगातार गिरावट देखी गई। हालांकि, इस क्षेत्र में चूक की दर सर्वाधिक⁶ स्तर पर बनी रहीं। वाणिज्यिक और औद्योगिक क्षेत्र में चूक दरों के सबसे कम होने के बावजूद 2016 में अब तक उनमें मामूली वृद्धि हुई है (चार्ट 11)।

ii) यूके की बैंकिंग प्रणाली - अच्छी वृद्धि हुई किंतु अनिश्चितता बनी रही

ब्रेक्सिट के उपरांत, यूके की बैंकिंग प्रणाली विनियामकों, निवेशकों एवं जमाकर्ताओं सहित सभी हिस्सेदारों की निगरानी में रही है। यूके की बैंकिंग प्रणाली के बारे में अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष सहित विभिन्न स्रोतों के विश्लेषण से यूके के बैंकों की हालत बढ़िया होने का पता चला, जिसमें पर्याप्त चलनिधि

उपलब्ध है और ब्रेक्सिट⁷ के परिणामी प्रतिकूल प्रभावों से निपटने के लिए उसके पास पर्याप्त पूंजी बफर है। प्रमुख बैंकिंग सूचकों में 2017 में अब तक अच्छी वृद्धि हुई है। निजी क्षेत्र की ऋण वृद्धि में, सितंबर और नवंबर 2016 के बीच आई कमी को छोड़कर, अप्रैल 2016 से जनवरी 2017 तक तेजी आई। निजी क्षेत्र की जमाराशि में भी सितंबर 2016 तक वृद्धि होती रही, उसके बाद इसमें थोड़ी मंदी आई (चार्ट 12)।

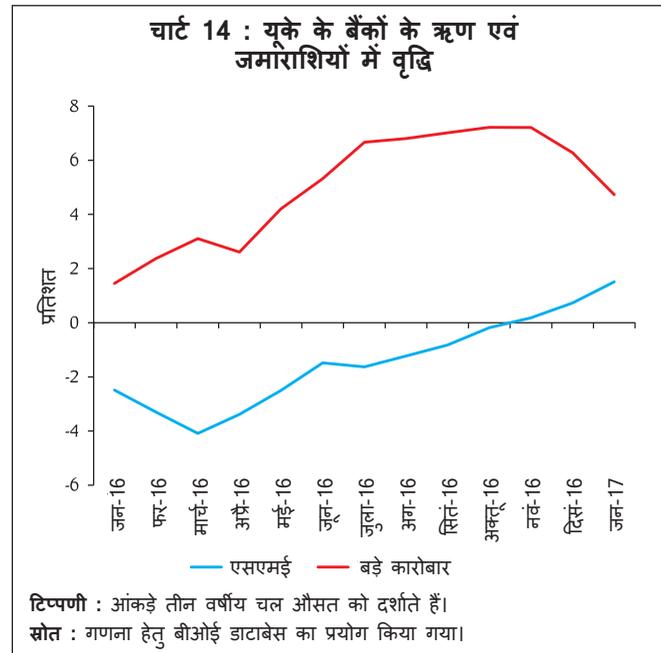
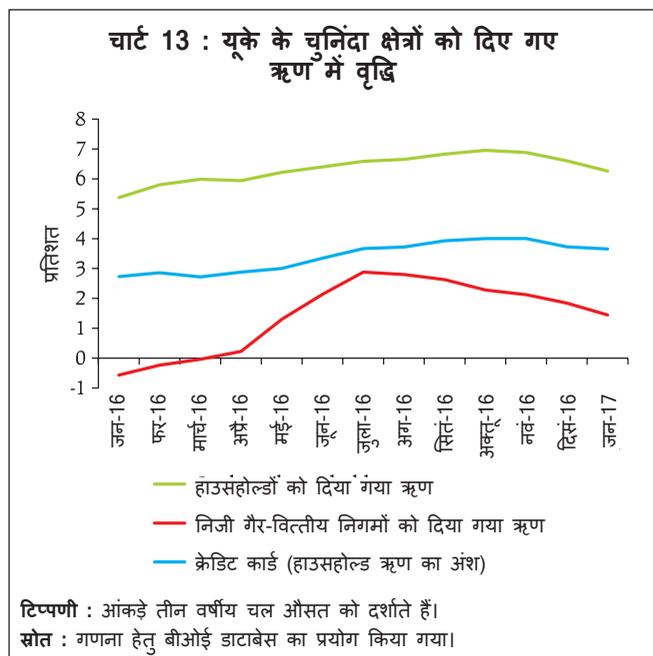


⁶ चूक दरों को मौसम के अनुसार समायोजित किया गया है। इनसे तात्पर्य ऐसे ऋणों से है जो 30 दिनों या उससे अधिक से बकाया हों और उन पर ब्याज अभी भी जमा हो रहा हो या जिनमें ब्याज जमा नहीं भी हो रहा हो।

⁷ जीएफएसआर - अक्टूबर 2016, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष

बैंक ऑफ इंग्लैंड (बीओई) के आंकड़ों से हाउसहोल्ड ऋण (व्यक्तियों और गैर-निगमित उद्यमों को दिए जाने वाले ऋण सहित), जो निजी क्षेत्र के ऋण का एक हिस्सा है, में वृद्धि होने का पता चलता है। हालांकि, बैंक ऋण और जमाराशि के दो सूचकों (जिनका जिक्र पहले किया गया) के अनुरूप अक्टूबर 2016 के बाद इसमें थोड़ी मंदी देखी गई। निजी गैर-वित्तीय निगमों को दिए जाने वाले ऋण, जो निजी क्षेत्र को दिए जाने वाले ऋण का दूसरा हिस्सा है, में जुलाई 2016 के बाद तेजी से और लगातार गिरावट देखी गई। संभवतः इसका कारण ब्रेक्सिट था (चार्ट 13)। इसके अलावा, बड़े कारोबारों के लिए दिए जाने वाले ऋण में भी जुलाई 2016 में स्पष्ट अंतर देखा गया। इन निगमों की जुलाई के बाद ऋण वृद्धि पहले की तुलना में कम थी (चार्ट 14)।

2016 के अधिकांश हिस्से के दौरान कारोबार के दूसरे प्रमुख हिस्से लघु और मझोले उद्यमों (एसएमई) को दिए जाने वाले ऋण में कमी आई (चार्ट 14)। हालांकि, 2017 में अब तक एसएमई ऋण में गिरावट की गति मंद हुई है। यह तथ्य बैंक ऑफ इंग्लैंड के ऋण परिस्थिति सर्वेक्षण से भी साबित हुआ, जिससे ऋण प्रवाह, पुनर्भुक्तान एवं चूक के बारे में बैंकों के मत की जानकारी प्राप्त हुई। इस सर्वेक्षण के अनुसार, 2016 की प्रथम तिमाही तक विस्तारित होने वाली



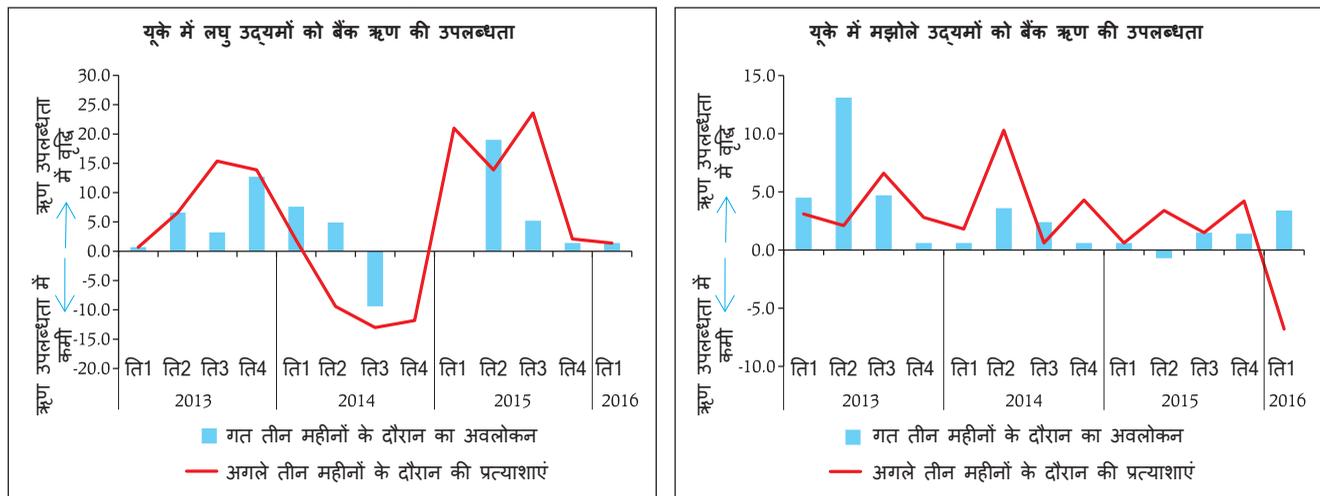
ब्रेक्सिट से पूर्व की अवधि में लघु एवं मध्यम -दोनों उद्यमों को दिए जाने वाले बैंक ऋण से संबंधित अतीत के प्रेक्षणों और भविष्य की संभावनाओं को व्यापक रूप से सकारात्मक दर्शाया गया (चार्ट 15)⁸।

यूके में हाउसहोल्ड कर्ज के उच्च स्तर के मद्देनजर, ब्रेक्सिट के उपरांत स्थावर संपदा बाजार में जारी समायोजन का हाउसहोल्ड चूक (डिफाल्ड) पर कुछ असर हो सकता है। 2016 की चौथी तिमाही तक उपलब्ध आंकड़ों से प्रत्याभूत हाउसहोल्ड ऋण के संबंध में चूक में कमी का पता चलता है (चार्ट 16)।

इसके आगे, बहुत से कारक यूके के बैंकों के संबंध में अनिश्चित वातावरण की ओर संकेत करते हैं। इनमें से कुछ संकेत निम्न लिखित हैं - (क) यूके में आर्थिक संभावना और रोजगार की बिगड़ती स्थिति; (ख) इस बात के मद्देनजर कि एसएमई बैंक ऋण के लिए स्थावर संपदा पर बहुत अधिक निर्भर होते हैं, स्थावर संपदा बाजार में समायोजन के बाद एसएमई के उपलब्ध ऋण में कमी होना; (ग) स्थावर संपदा बाजारों में समायोजन का हाउसहोल्ड क्षेत्र में पुनर्भुक्तान पर भी विपरीत असर पड़ा; और (घ) यूके के बैंकों में ब्याज दरें कम होने के साथ ही परिचालन लागत की अधिकता के बाद लाभप्रदता का निरंतर कम होना।

⁸ 2016 की दूसरी तिमाही से संबंधित आंकड़े अभी उपलब्ध नहीं हैं।

चार्ट 15: यूके में एसएमई को ऋण की उपलब्धता के संबंध में प्रत्याशाएं



टिप्पणी: आंकड़े निवल शेष दर्शाते हैं, जिसका अनुमान बाजार में उनकी हिस्सेदारी के अनुसार प्रश्न का उत्तर देने वाले ऋणदाताओं की प्रतिक्रियाओं पर विचार-विमर्श करके किया गया है।
स्रोत: बीओई, क्रेडिट कन्डीशन्स सर्वे।

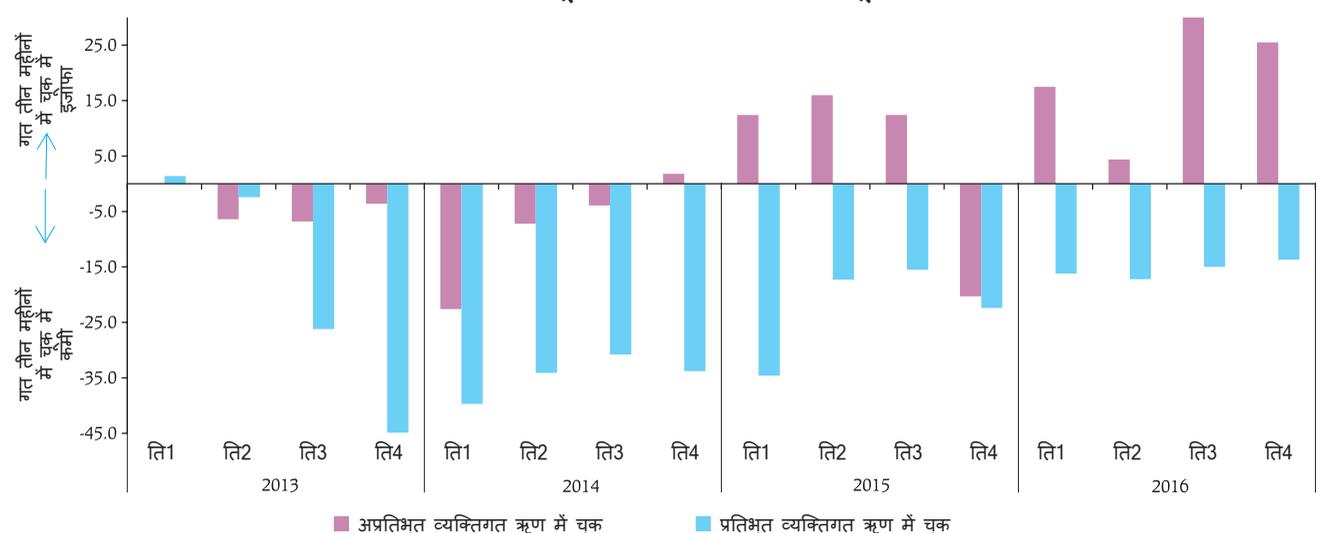
iii) यूरो क्षेत्र में बैंकिंग प्रणाली - वित्तपोषण के स्रोतों में स्थिरता की बढ़ती ऋण वृद्धि में बढ़ती

कुल मिलाकर, 2016 में यूरो क्षेत्र के बैंकों के तुलन पत्र की वृद्धि में इजाफा हुआ था। इसके अतिरिक्त, 2015 के उत्तरार्ध से आस्ति वृद्धि चक्र का निर्माण भी अपेक्षाकृत रूप से उच्च स्तर पर था। इस अवधि के दौरान दूसरी सकारात्मक

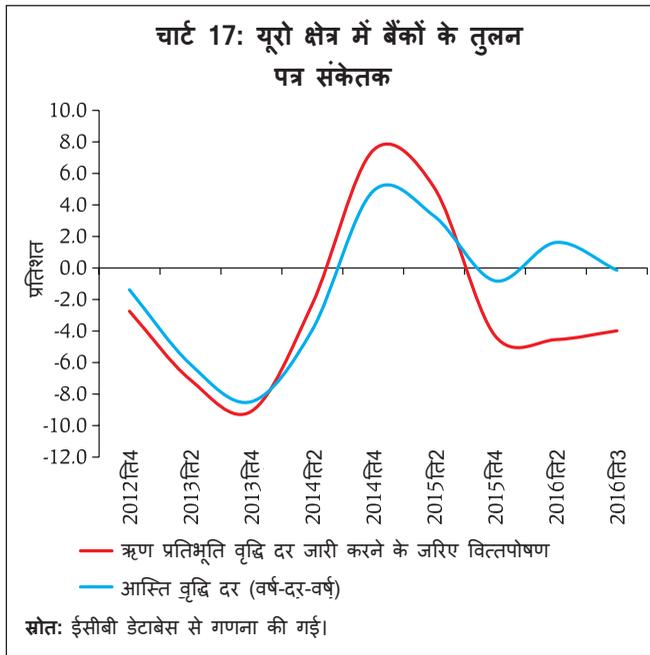
विशेषता यह थी की ऋण प्रतिभूतियां जारी करने के जरिए बैंकों के वित्तपोषण के विकास चक्र को अत्यंत निम्न स्तर पर सीमित किया गया था (चार्ट 17)।

निजी गैर-वित्तीय क्षेत्र को प्रदत्त ऋण ने जून 2015 से सकारात्मक वृद्धि की। प्रमुख सदस्य देशों में, जहां फ्रांस और जर्मनी ने सितंबर 2016 में करीब-करीब इस प्रवृत्ति का पीछा

चार्ट 16: यूके में हाउसहोल्ड ऋण में चूक



टिप्पणी: आंकड़े निवल शेष दर्शाते हैं, जिसका अनुमान बाजार में उनकी हिस्सेदारी के अनुसार प्रश्न का उत्तर देने वाले ऋणदाताओं की प्रतिक्रियाओं पर विचार-विमर्श करके किया गया है।
स्रोत: बीओई, क्रेडिट कन्डीशन्स सर्वे।

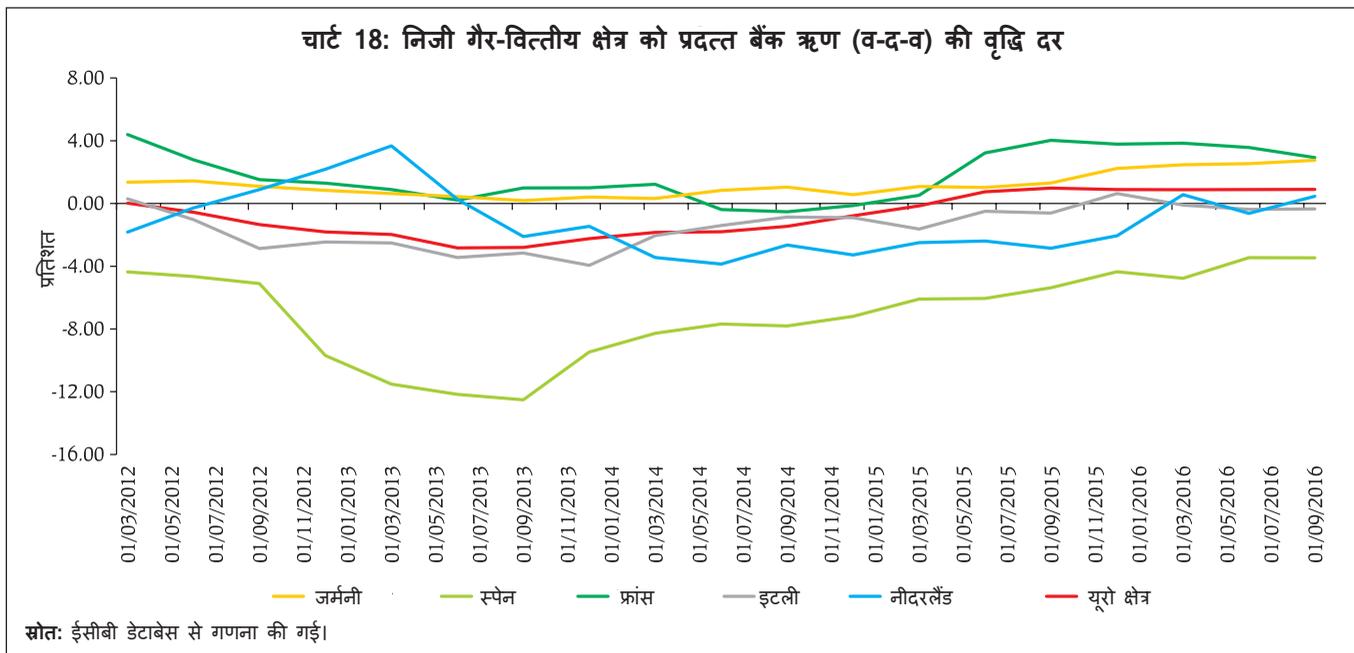


किया, वहीं इटली और नीदरलैंड में वृद्धि जून 2016 में फिर से ऋणात्मक हो गई। फिर भी, सितंबर 2016 में नीदरलैंड ने एक बार फिर वृद्धि की। इसके विपरीत, स्पेन में ऋण वृद्धि में गिरावट जारी रही (चार्ट 18)।

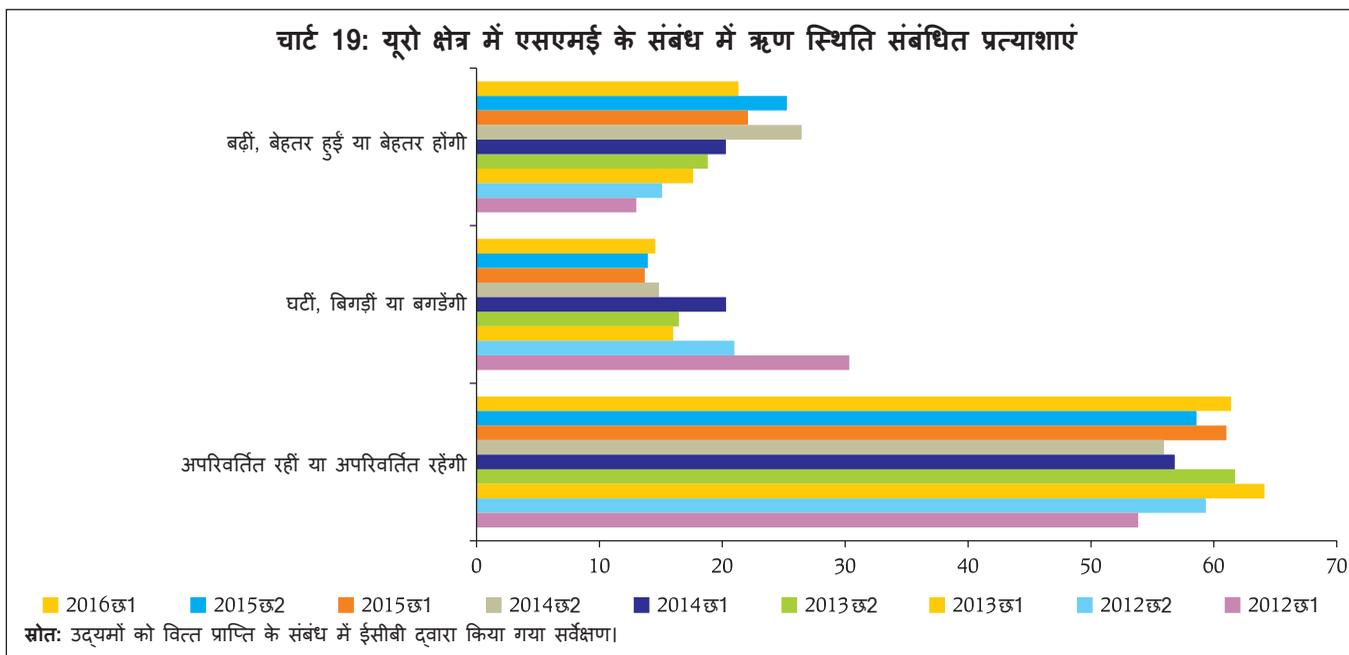
यूरो क्षेत्र में एसएमई का कुल फर्मों में 99.8 प्रतिशत, कारोबार में 60 प्रतिशत एवं रोजगार में 70 प्रतिशत हिस्सा था

और वह काफी हद तक बैंक वित्त पर आश्रित था।⁹ यूरो क्षेत्र में एसएमई को वित्त की सुलभता के संबंध में ईसीबी सर्वेक्षण से मालूम होता है कि इन उद्यमों को ऋण की उपलब्धता में सुधार को लेकर जो उम्मीद की जाती है वह 2014 के उत्तरार्ध से संभावित गिरावट की जो उम्मीद की गई है, उससे कहीं अधिक है (चार्ट 19)।

अक्टूबर 2016 के जीएफएसआर में, आईएमएफ ने पाया कि 2015 के अंत में, यूरो क्षेत्र के बैंक 2004-06 के दौरान के अपने औसत लाभ का आधा आय भी नहीं कर पा रहे थे। यूरो क्षेत्र के बैंकों की लाभप्रदता अत्यंत कम होने के बावजूद उसके द्वारा निजी गैर-वित्तीय क्षेत्र को प्रदत्त ऋण की वृद्धि में इजाफा हुआ जो ईसीबी द्वारा जून 2014 से किए गए उपायों की बदौलत हो पाया क्योंकि उन्होंने बैंकों को अधिक ऋण देने के लिए बढ़ावा दिया था। ईसीबी द्वारा किए गए उपायों में से एक उपाय था ऋणात्मक जमा दर लागू करना। यह वह जमाराशि सुविधा है, जिसके तहत बैंक अपने धन को ईसीबी के पास एक रात के लिए रखते हैं और बदले में ब्याज प्राप्त करते हैं, जिसे ऋणात्मक कर दिया गया ताकि ज्यादा उधार दिया जा सके (चार्ट 20)। यह नीति मुख्य पुनर्वित्तीयन

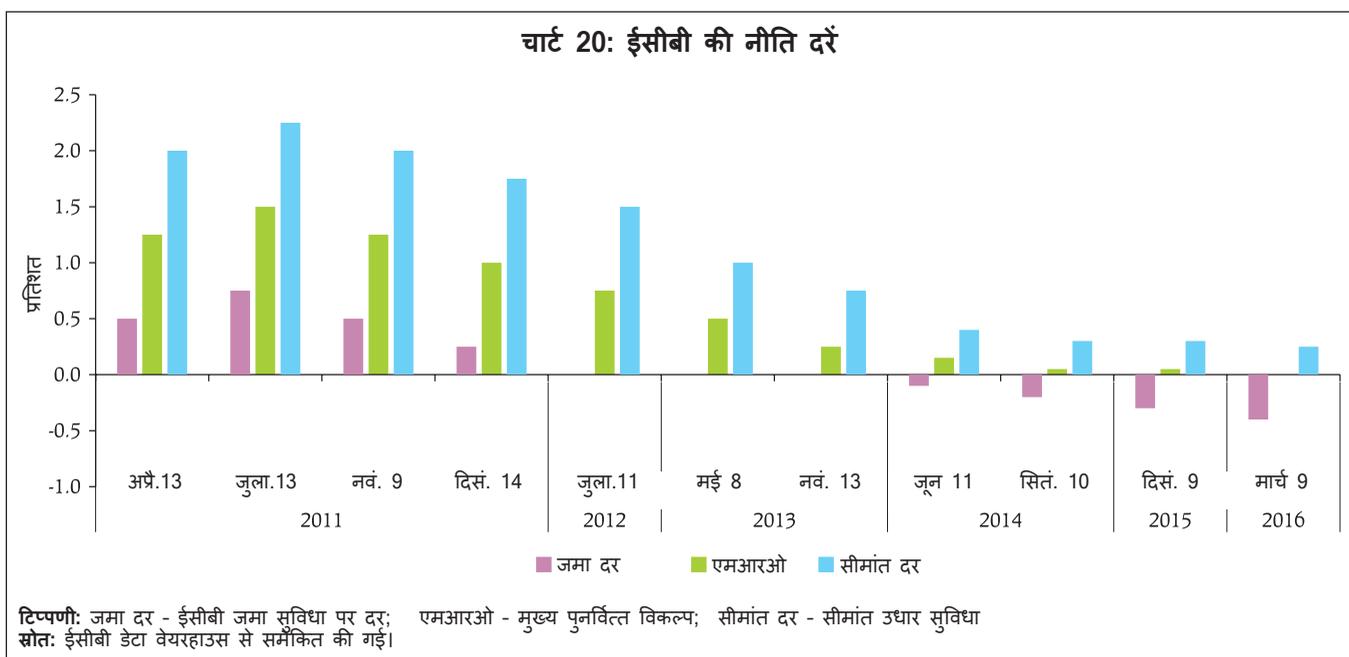


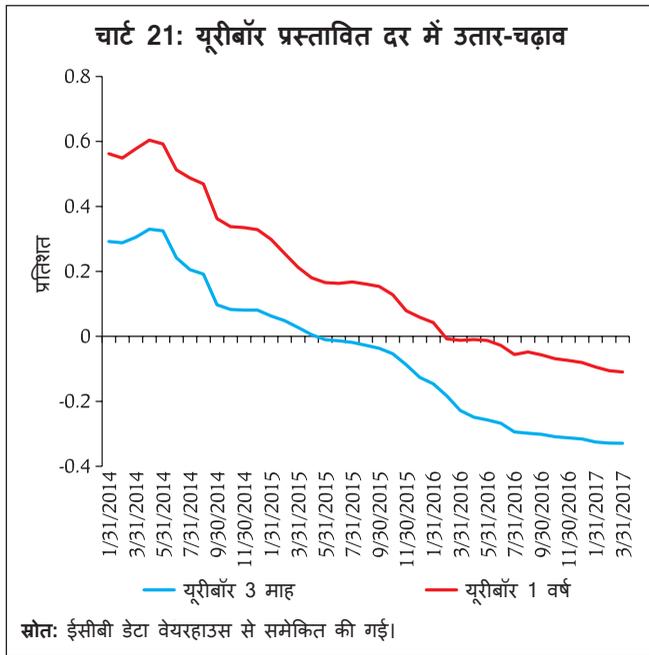
⁹ आंकड़े, ईसीबी/उद्यमों को वित्त की सुलभता/सर्वेक्षण विवरण एवं प्रणाली संबंधी सूचना से प्राप्त किए गए।



परिचालनों (वह ब्याज दर जिस पर बैंकिंग प्रणाली को थोक में नकदी उपलब्ध कराई जाती है) एवं सीमांत उधार सुविधा (वह ब्याज दर जिस पर बैंकों को एक रात के लिए ऋण प्रदान किया जाता है) पर लागू ब्याज दर में जारी कटौती की एक पूरक व्यवस्था है।

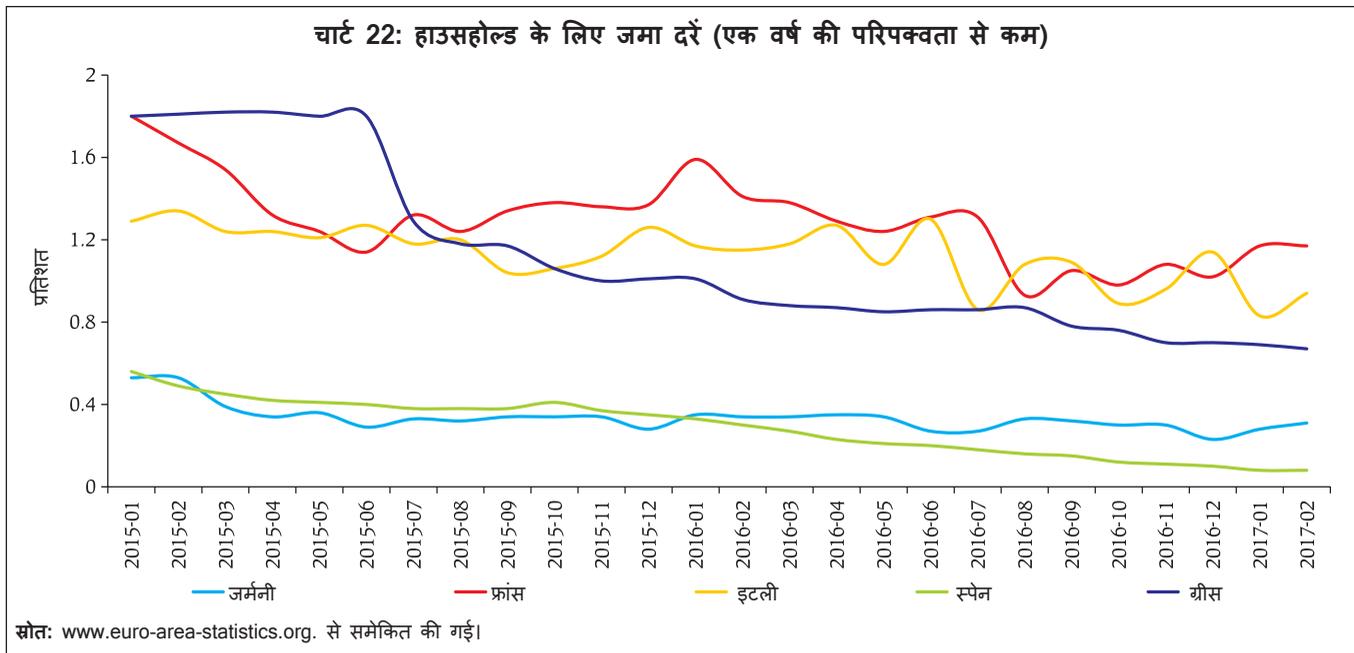
2014 तक, ईसीबी की जारी नीतियों के माध्यम से उपलब्ध कराई गई नकदी का उपयोग बैंकों ने गैर-वित्तीय क्षेत्र को निधि अंतरित करने के बजाय मुख्यतः अपने कर्ज को कम करने के लिए किया। इसलिए, ईसीबी ने सितंबर 2014 में ऋणात्मक दर लागू किया और साथ ही मात्रात्मक



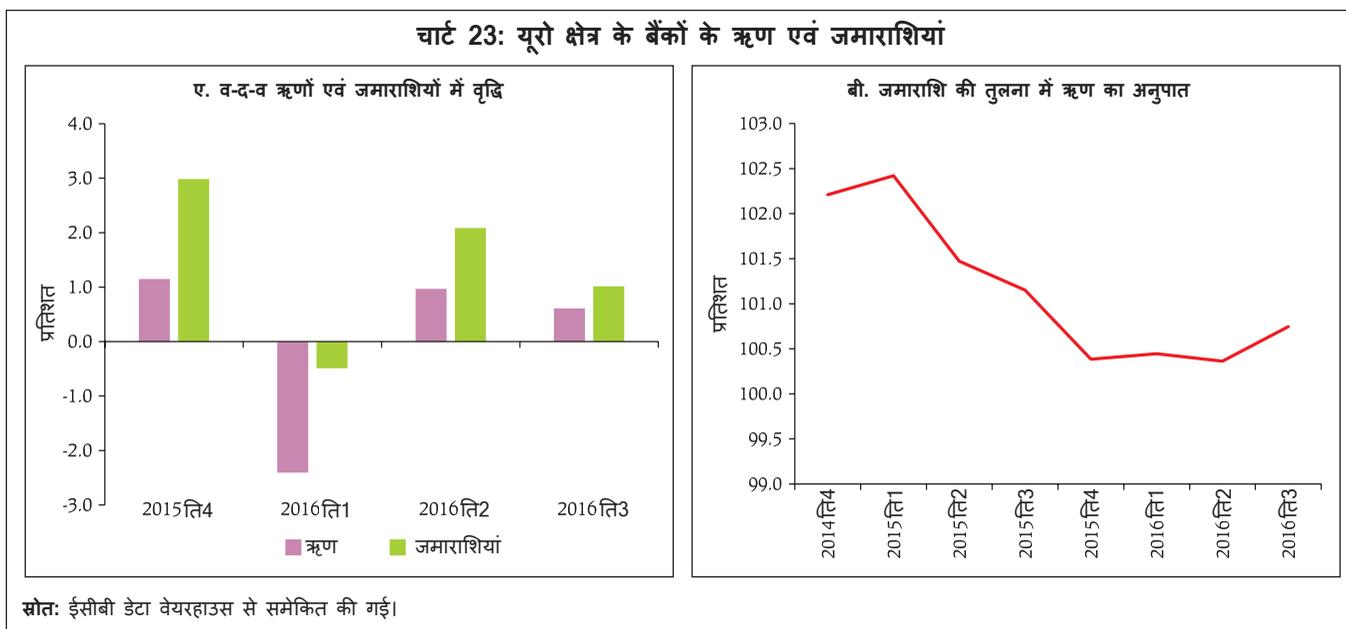


सुलभता फिर से आरंभ की। 2014 से यूरोबॉर (यूरो अंतर-बैंक प्रस्तावित दर) में लगातार गिरावट आई है जिसकी वजह

से 2015 से दरें ऋणात्मक होने लगीं (चार्ट 21)। इसकी बदौलत (क) अंतरबैंक बाजार में चलनिधि में आधिक्य पाया गया और (ख) यूरो क्षेत्र के सरकारों की ऋण पात्रता बेहतर हुई। जैसा कि पहले भी गौर किया गया, वित्तपोषण का पहलू देखें तो पता चलता है कि यूरो क्षेत्र के बैंकों ने गत वर्ष होलसेल फंडिंग के बजाय ऋण प्रतिभूतियां जारी कीं। इस बदलाव की बदौलत सदस्य देशों द्वारा जमाराशि जैसे स्थिर फंडिंग विकल्प अपनाए जाने लगे। चुनिंदा सदस्यों देशों¹⁰ में अल्पावधि जमा दरों में गिरावट से पता चलता है कि इन देशों में वित्तपोषण को लेकर बैंकों का तनाव हल्का हुआ है (चार्ट 22)। वास्तव में, यूरो क्षेत्र के सभी बैंकों का जमा की तुलना में ऋण का अनुपात 2015 की पहली तिमाही में 102.4 प्रतिशत था जो 2016 की तीसरी तिमाही में घटकर 100.7 प्रतिशत रह गया, क्योंकि यूरो क्षेत्र के बैंकों की कुल जमाओं में उस क्षेत्र के कुल ऋणों की अपेक्षा उच्च दर से वृद्धि हुई (चार्ट 23ए एवं 23बी)।



¹⁰ इटली के सिवाय सभी प्रमुख यूरो क्षेत्र के देशों में, कम से कम दिसंबर 2016 तक, जिस अवधि तक तुलन पत्र का आंकड़ा उपलब्ध है, यह रुझान पाया गया।



IV. विश्व के शीर्ष 100 बैंकों के कार्यनिष्पादन

शीर्ष 100 में स्थान बनाए रखने वाले बैंक

2015 और 2016 के बीच विश्व के शीर्ष बैंकों के रैंक (टिआर 1 पूंजी के अनुसार वैश्विक रैंक का निर्धारण) में कोई खास बदलाव नहीं पाया गया। रैंक के सहसंबंध गुणांक शीर्ष के 20 और शीर्ष के 50 बैंकों के क्रमशः 0.95 और 0.97 हैं।¹¹

उभरती अर्थव्यवस्थाओं की आस्ति के हिस्से में इजाफा

यद्यपि, एई और ईएमडीई से शीर्ष 100 में स्थान पाने वाले बैंकों की संख्या 2015 और 2016 में मोटे तौर पर समान रहीं, लेकिन ईएमडीई के बैंकों की आस्तियों का हिस्सा बढ़ा, जो सामान्यतः वैश्विक वित्तीय संकट के बाद पाया गया रुझान था (चार्ट 24)।

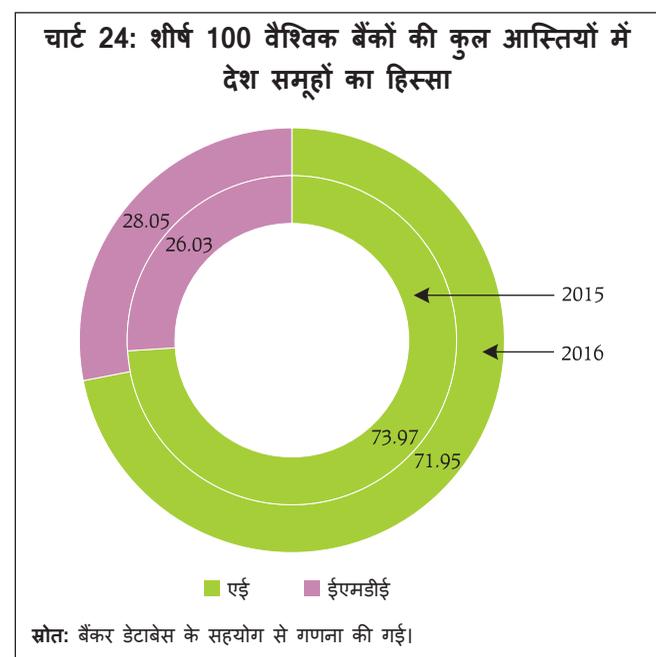
शीर्ष 100 बैंकों में, जापान और अमरीका को छोड़कर, व्यक्तिगत एई की आस्ति का हिस्सा 2015 और 2016 में घटा और फ्रांस, जर्मनी एवं यूके में यह गिरावट सुस्पष्ट थी।

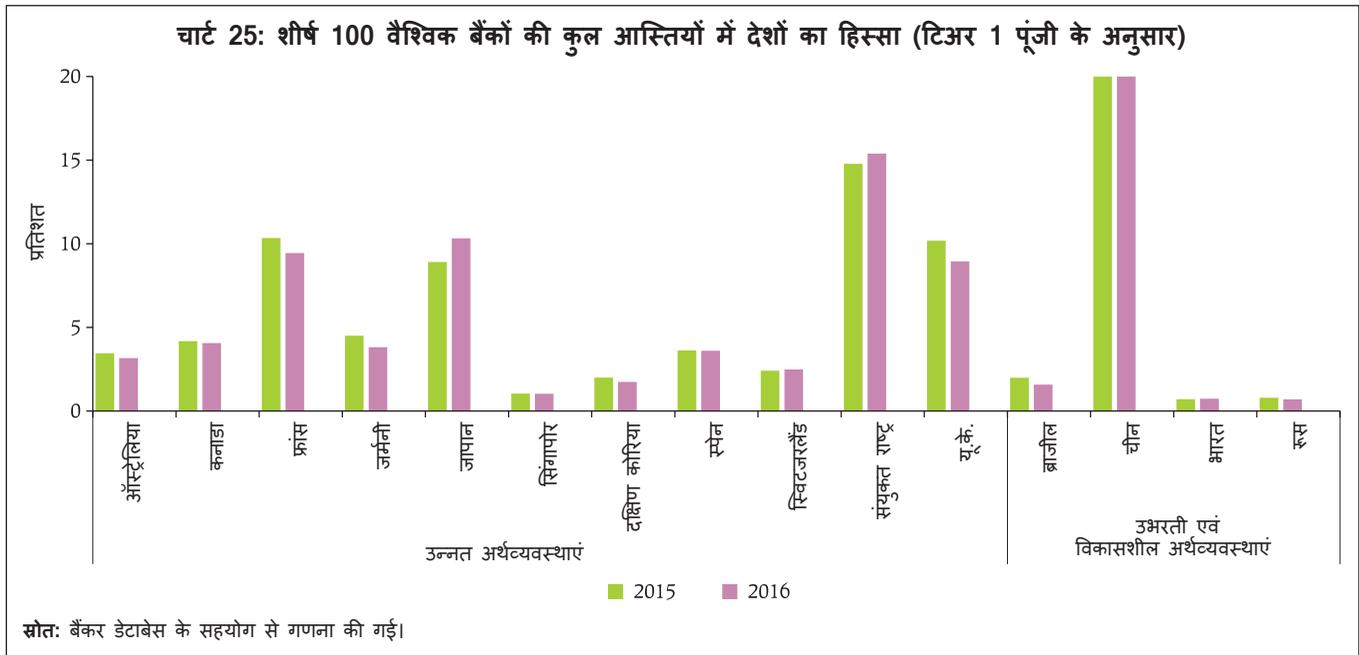
¹¹ यह बैंकर डेटाबेस के आधार पर की गई गणना है। गुणांकों का आकलन इस अनुमान के आधार पर किया गया था कि बैंकों के सैम्पल दो वर्षों के बीच समान थे। इस प्रकार फिर से रैंकिंग की गई, जिसके लिए इन वर्षों के बीच नए जोड़े गए/निकाले गए बैंकों को हटाया गया। चूंकि अधिकांश देश कैलेंडर वर्ष का पालन करता है, इसलिए इस डेटाबेस में किसी अमुक वर्ष के लिए डेटा सीरीज़ गत वर्ष के दिसंबर तक ही उपलब्ध हो पाया है।

इसके विपरीत, ईएमडीई का हिस्सा बढ़ा जो चीन की बदौलत हुआ (चार्ट 25)।

शीर्ष 100 बैंकों की लाभप्रदता में बढ़ता अंतर

शीर्ष 100 बैंकों की लाभप्रदता में बढ़ता अंतर दर्शाता है कि ऋणात्मक आस्तियों पर प्रतिलाभ (आरओए) सूचित करने वाले बैंकों का हिस्सा 2015 के 2 प्रतिशत से बढ़कर 2016 में





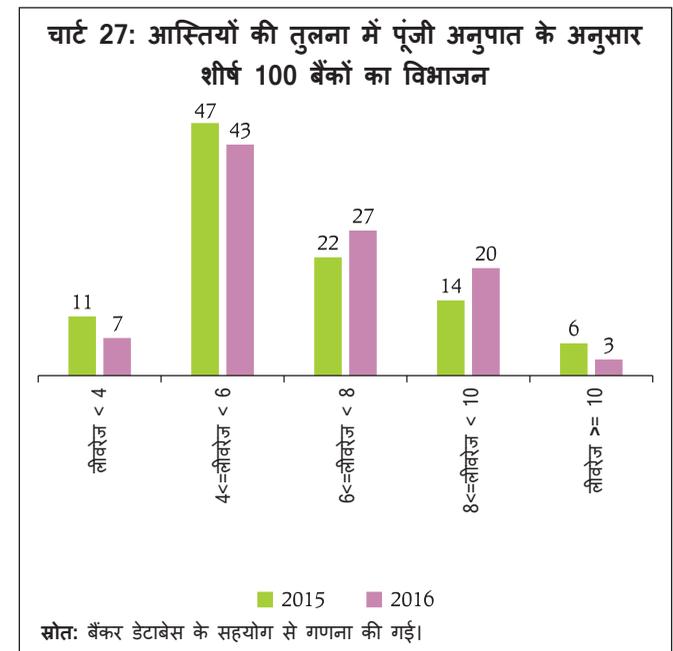
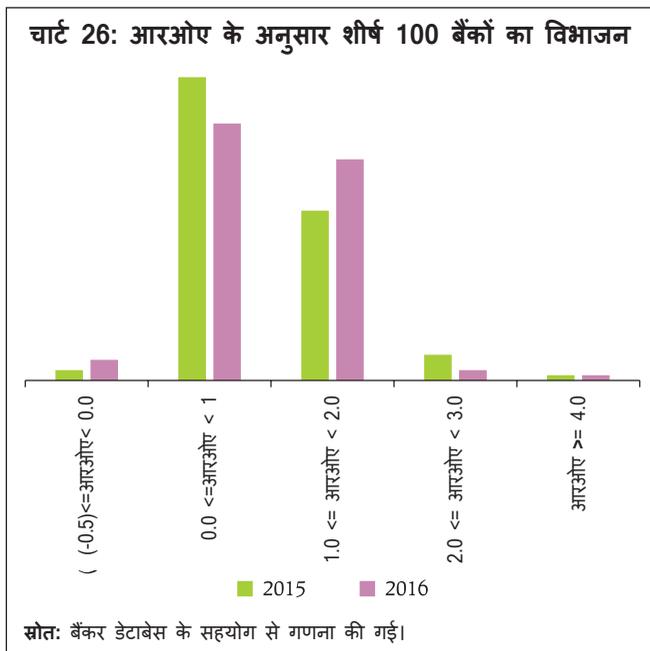
4 प्रतिशत तक पहुंच गया है और उच्चतर आरओए (0 और 2 प्रतिशत के बीच) सूचित करने वाले बैंकों का हिस्सा 92 प्रतिशत से बढ़कर 93 प्रतिशत हो गया है (चार्ट 26)।

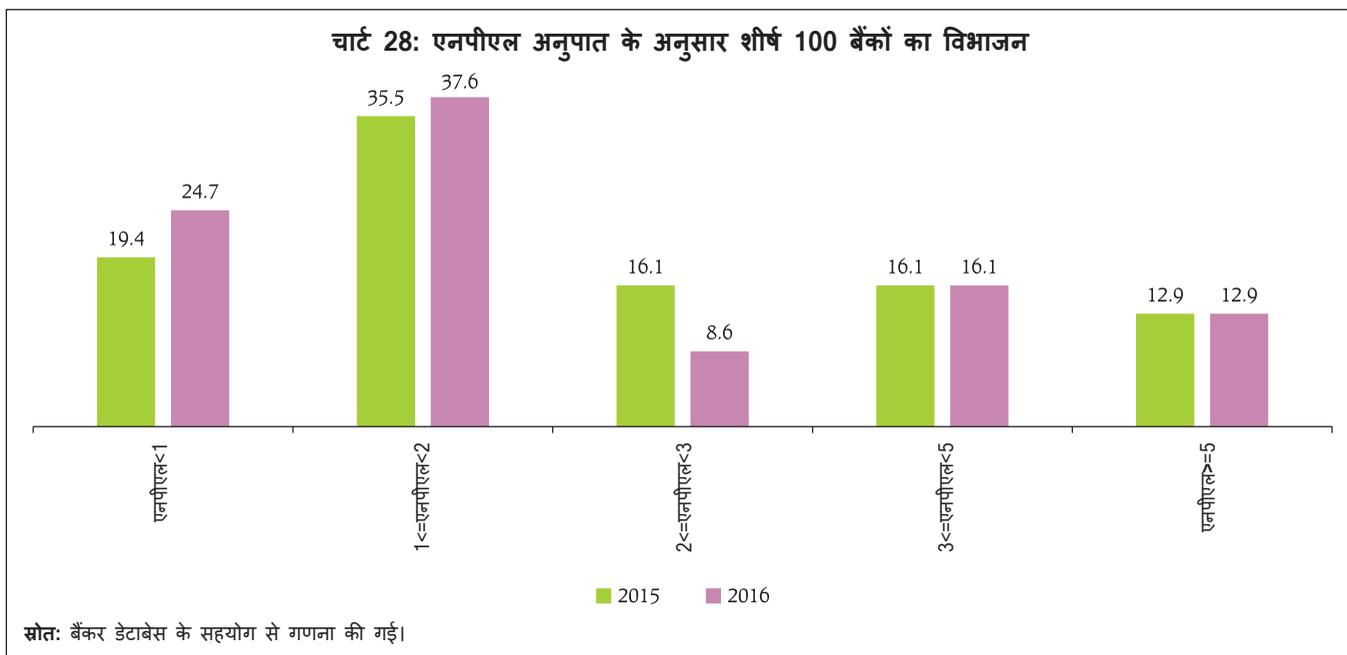
शीर्ष 100 बैंकों की वित्तीय सुदृढ़ता में सुधार

2015 और 2016 के बीच, आस्तियों की तुलना में पूंजी का अनुपात (निम्नतर वित्तीय लीवरेज) (6 से 10 प्रतिशत के

दायरे में), उच्च सूचित करने वाले बैंकों की संख्या में वृद्धि हुई जो 36 प्रतिशत से बढ़कर 47 प्रतिशत हो गई (चार्ट 27)।

दूसरा सकारात्मक बदलाव यह था कि शीर्ष 100 बैंकों की आस्ति गुणवत्ता में कुल मिलाकर सुधार हुआ। पहला, उन बैंकों के हिस्सों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ जिनका अनर्जक उधार आकार वर्ग उच्चतर अर्थात् 3 प्रतिशत से अधिक के



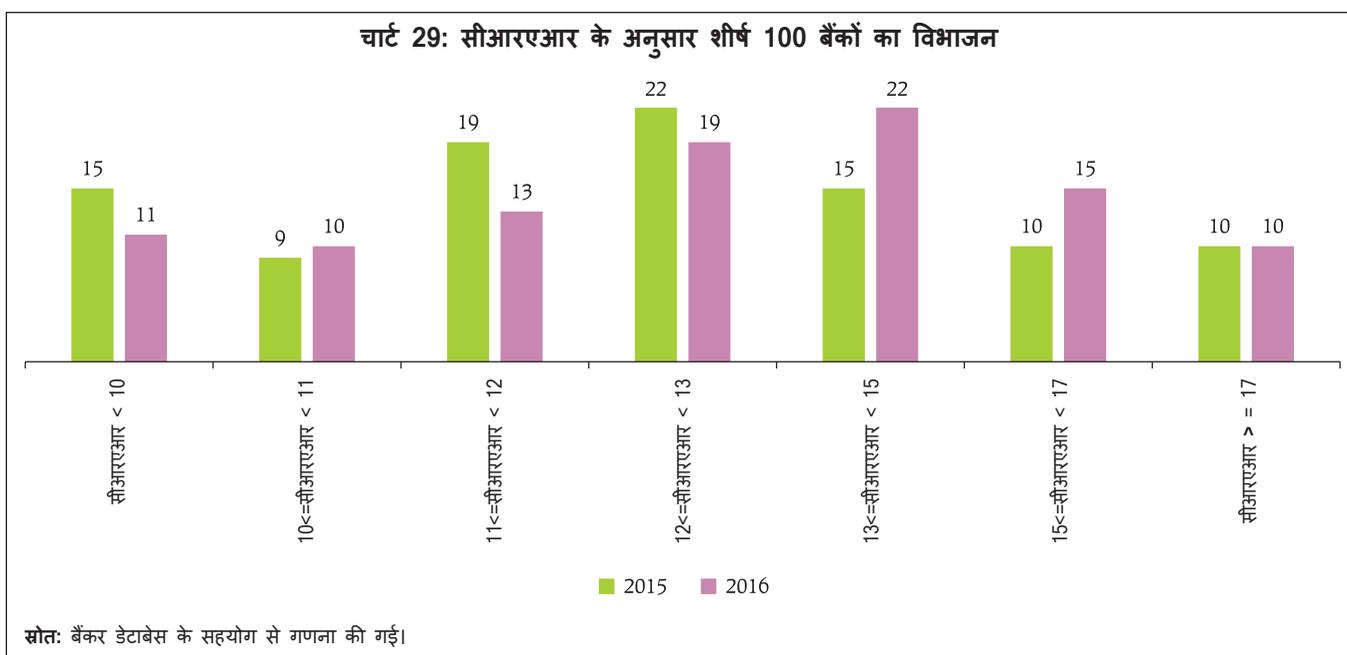


दायरे में था। दूसरा, उन बैंकों के हिस्सों में तेजी से गिरावट आई जिन्होंने 2-3 प्रतिशत के बीच अनर्जक उधार सूचित किया (चार्ट 28)।

तीसरा, यह भी देखा जा सकता है कि पूंजी पर्याप्तता स्थिति को सुदृढ़ करने पर अत्यधिक ध्यान केंद्रित किया जा रहा है। 13 से 17 प्रतिशत सीआरएआर वाले बैंकों का संकेंद्रण 25 प्रतिशत से बढ़कर 37 प्रतिशत हो गया (चार्ट 29)।

V. वैश्विक बैंकिंग नीति को दुरुस्त करना

विनियामक रिफॉर्म एवं विश्व स्तर पर सक्रिय बैंकों की निगरानी के लिए एक बेहतर सुसंगत ढांचा तैयार करने की बढ़ती मान्यता को महसूस किया गया। तदनुसार, 2016 में वैश्विक विनियामक मानकों का सुदृढ़ीकरण जारी रहा। बैंकिंग जगत ने जो बेहतर आघात सहनीयता दिखाया, वह बासेल III पूंजी पर्याप्तता मानदंडों के प्रभाव को दर्शाता है। हाल में,



उन नीतियों पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है जो जनता के भरोसे को बढ़ावा दे और साथ ही बैंकों की सुरक्षा एवं दृढ़ता को कायम रखे। विश्व स्तर पर विनियामक रिफॉर्म को लागू करने की बदौलत प्रमुख बैंकों की पूंजी एवं चलनिधि बफर में वृद्धि हुई है।

बैंकों द्वारा नए कारोबार की वास्तविकताओं और नए विनियामक मानकों को अपनाए जाने के जरिए अशोध्य ऋणों को कम करने एवं तुलन पत्र को मजबूत करने के जो प्रयास किए गए, वे निम्न वृद्धि एवं निम्न ब्याज दरों के युग की अनिवार्यता को दर्शाते हैं। बढ़ती अनिश्चितताओं के इस दौर में नीति निर्माताओं की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो गई है, क्योंकि विनियामक रिफॉर्म एजेंडा जो पूरा किया जाना है।

हाल में, विश्व स्तर पर विनियामक मानकों में जो बड़े बदलाव हुए हैं, उनमें शामिल हैं :

कुल हानि-अवशोषण क्षमता पूंजी मानक

बैंकिंग पर्यवेक्षण पर बासेल समिति (बीसीबीएस) द्वारा अक्टूबर 2016 में जो अंतिम मानक जारी किया गया था, वह विश्व स्तर पर प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण बैंक (जी-एसआईबी) एवं गैर-एसआईबी, दोनों पर लागू होता है और साथ ही उसका लक्ष्य है वित्तीय प्रणाली में संक्रामकता के जोखिम को कम करना। मानक का एक महत्वपूर्ण तत्व है कि बैंकों को अपने टिआर 2 पूंजी से एक न्यूनतम सीमा तक कुल हानि-अवशोषण क्षमता (टीएलएसी) पूंजी अवश्य घटा लेनी चाहिए जो विनियामक पूंजी के रूप में अन्यथा योग्य न हो।

बैंकिंग बही में ब्याज दर जोखिम के लिए मानक (आईआरआरबीबी)

बीसीबीएस द्वारा अप्रैल 2016 में ब्याज दर जोखिम के प्रबंधन और पर्यवेक्षण संबंधी 2004 के सिद्धान्तों में संशोधन करते हुए नए मानक जारी किए गए थे। ये मानक बैंकों द्वारा आईआरआरबीबी की पहचान, माप, निगरानी और नियंत्रण के साथ-साथ उसके पर्यवेक्षण के लिए पर्यवेक्षी प्रत्याशाएं निर्धारित करते हैं। 2004 के मानकों में, अन्य चीजों के साथ-साथ की गई वृद्धि में बैंक की आईआरआरबीबी प्रबंधन प्रक्रिया को लेकर प्रत्याशा, बेहतर प्रकटीकरण आवश्यकताएं, अपडेटेड मानकीकृत ढांचा एवं बहिर्वासी बैंकों का पता लगाने के लिए स्पष्ट न्यूनतम सीमा, जिसे बैंक की कुल पूंजी के 20 प्रतिशत से

घटाकर बैंक की टिआर 1 पूंजी का 15 प्रतिशत कर दिया गया है, के संबंध में अधिक व्यापक मार्गदर्शन शामिल हैं। मानकों को 2018 तक लागू करने की उम्मीद की जा रही है।

लेखांकन प्रावधानों का विनियामक बर्ताव

बीसीबीएस द्वारा अक्टूबर 2016 में लेखांकन प्रावधानों के विनियामक बर्ताव से जुड़े नीति संबंधी मामलों पर सलाहकार दस्तावेज और साथ ही चर्चा पत्र जारी किए गए थे। नए लेखांकन मानक बनाते समय प्रावधानीकरण मानकों में संशोधन किया गया है ताकि ऋण हानि के आकलन में आधुनिक विचारों से ओत-प्रोत मूल्यांकनों को शामिल किया जा सके। सलाहकार दस्तावेज में मानकीकृत एवं आंतरिक रेटिंग-आधारित दृष्टिकोणों के अंतर्गत प्रावधानों के वर्तमान विनियामक बर्ताव को अल्प काल के लिए बरकरार रखने का समिति के प्रस्ताव का उल्लेख किया गया है। इसमें ऋण हानि के संबंध में प्रत्याशित नए मानकों के अंतर्गत प्रावधानों के दीर्घकालिक विनियामक बर्ताव के लिए नीतिगत विकल्प शामिल हैं।

प्रतिभूतिकरण ढांचे में संशोधन

बीसीबीएस ने जुलाई 2016 में प्रतिभूतिकरण एकसपोजर के विनियामक पूंजी बर्ताव के लिए अपडेटेड मानक प्रकाशित किया ताकि प्रतिभूतिकरण संबंधी 2014 के पूंजी मानकों में संशोधन करते हुए "सरल, पारदर्शी एवं तुलनीय" (एसटीसी) प्रतिभूतिकरणों के लिए विनियामक पूंजी बर्ताव को शामिल किया जा सके। एसटीसी प्रतिभूतिकरणों के लिए पूंजी बर्ताव को बासेल समिति एवं अंतरराष्ट्रीय प्रतिभूति आयोग संगठन द्वारा प्रकाशित 2015 के एसटीसी मानदंड की तर्ज पर तैयार किया गया है। इसमें अतिरिक्त मानदंड निर्धारित किया गया है जो एसटीसी प्रतिभूतिकरणों के पूंजी बर्ताव को अन्य प्रतिभूतिकरण लेनदेनों से अलग करता है। यह उम्मीद की जाती है कि मानक एक बार कारगर (अर्थात्, जनवरी 2018 में) हो जाने से अधिक आघात सहनीय बैंकिंग क्षेत्र का निर्माण हो सकेगा।

विभिन्न विनियामक रिफॉर्म के कार्यान्वयन में शामिल मुख्य उपलब्धियां इस प्रकार हैं :

रिफॉर्म हेतु जी20 एजेंडा का कार्यान्वयन

वित्तीय स्थिरता बोर्ड (एफएसबी) ने रिफॉर्म के कार्यान्वयन एवं प्रभाव के विषय में जी20 को प्रस्तुत अपनी दूसरी वार्षिक

रिपोर्ट में रिफॉर्म कार्यक्रम के चार मूल तत्वों पर प्रकाश डाला, जिसमें शामिल हैं : (i) वित्तीय संस्थाओं की आघात सहनीयता को बढ़ाना; (ii) टू-बिग-टू-फैल धारणा को खत्म करना; (iii) डेरिवेटिव बाजारों को महफूज़ रखना; और (iv) शैडो बैंकिंग को आघात सहनीय बाजार-आधारित वित्त में बदलना। जहां तक रिफॉर्म के कार्यान्वयन की प्रगति का संबंध है, यह स्थिर रही है लेकिन मूल क्षेत्रों में समान नहीं है।

बासेल III को अपनाना

आम तौर पर, बासेल III पूंजी और चलनिधि मानकों का कार्यान्वयन समय पर होता रहा है और तत्संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बैंकों पर नज़र रखी गई थी। फिर भी, कई प्रमुख एई, बासेल ढांचे से उनके नियमों में हुए भूल का समाधान नहीं कर सके। सभी 24 एफएसबी क्षेत्राधिकारों में बासेल III के जोखिम-आधारित पूंजी और चलनिधि विनियमों के मूल तत्व हैं। जी-एसआईबी के लिए हानि के अधिकाधिक अवशोषण आवश्यकताओं के संबंध में अंतिम नियम सभी क्षेत्राधिकारों में लागू हैं।

जी-एसआईबीएस

जी-एसआईबी के मामले में, हानि के अधिकाधिक अवशोषण के कार्यान्वयन एवं अधिक गहन पर्यवेक्षण पर बराबर नज़र रखी जा रही है। वर्ष 2016 में, एफएसबी द्वारा जी-एसआईबी की सूची प्रकाशित की गई और 30 संस्थाएं निर्धारित की गईं। 2016 के दौरान, चार बैंकों ने उच्चतर बकेट में और तीन बैंकों ने निम्नतर बकेट में स्थान पाया।

VI. निष्कर्ष और भावी दृष्टिकोण

इस आलेख में किए गए विश्लेषण के आधार पर चार व्यापक टिप्पणियां की जा सकती हैं। पहला, बैंक ऋण वृद्धि, जो विश्व स्तर पर बैंकिंग प्रणाली की आस्तियों के विस्तार के लिए महत्वपूर्ण है और इस संबंध में एई और ईएमडीई के बीच काफी अंतर पाया गया है, जिसमें एई की वृद्धि के मामले में आघात सहनीय स्वरूप देखने को मिलता है। अमरीका सहित अधिकांश एई में, खुदरा क्षेत्र ही एक ऐसा क्षेत्र है जिसने आघात

सहनीयता दिखाई। ऐसे क्षेत्र, जो ऋण के लिए बैंक वित्त पर भारी मात्रा में निर्भर करते हैं और रोजगार एवं वृद्धि की बहाली के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, जैसे एसएमई, उनकी संभावना भी मौटे तौर पर सकारात्मक रही। फिर भी, आर्थिक दृष्टि से तंग एई, नामतः, स्पेन, पुर्तगाल और इटली में ऋण वृद्धि में गिरावट चिंता का विषय बना रहा। इसके ठीक विपरीत, अधिकांश ईएमडीई में ऋण वृद्धि में गिरावट आ रही थी या ऋणात्मक भी हो रही थी जो आस्ति की गुणवत्ता को लेकर लगातार चिंता जताने की वजह से हुआ। दिलचस्प बात यह है कि, ईएमडीई की ऋण वृद्धि में गिरावट के होते हुए भी, इन अर्थव्यवस्थाओं के बैंकों की विश्व स्तर पर बैंकिंग आस्तियों में हिस्सेदारी बढ़ी।

ईएमडीई की आस्ति गुणवत्ता, जो दूसरा चिंताजनक विषय है, खराब रही। स्पेन, पुर्तगाल एवं इटली के सिवाय अधिकांश एई की आस्ति गुणवत्ता में स्पष्ट सुधार आया। तीसरा, अधिकांश एई की लाभप्रदता, जिसका ऋण वृद्धि एवं आस्ति गुणवत्ता से गहरा संबंध है, मामूली सुधार आया जैसा आरओए में वृद्धि से पता चलता है। तथापि, इन सभी अर्थव्यवस्थाओं में आरओए 1 प्रतिशत से कम रहा। इसके विपरीत, अधिकांश ईएमडीई में बैंकिंग प्रणालियों की लाभप्रदता में गिरावट साफ दिखाई देती है। चौथा, फिर भी, जहां तक पूंजी पर्याप्तता स्तरों में सुधार का संबंध है, एई एवं ईएमडीई, दोनों, में समान रुझान पाया गया।

विश्व स्तर पर, नीति निर्माता अपनी बैंकिंग प्रणालियों के विनियामक ढांचे को मजबूत करने की प्रक्रिया में लगे हुए हैं। इनमें से कुछ नीतियों के तत्काल परिणाम मिले हैं और बाकी का बाद में आ सकता है। उम्मीद की जाती है कि ये सभी मिलकर विश्व स्तर पर बैंकिंग प्रणाली को अधिक मजबूत और आघात सहनीय बनाएंगे।

फिर भी, सुदृढ़ता बढ़ाने के लिए किए गए सकारात्मक प्रयासों के बावजूद, विश्व स्तर पर बैंकिंग प्रणाली को कई जोखिमों और चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। ये जोखिम न केवल बैंकिंग प्रणाली के भीतर से बल्कि आम तौर पर वैश्विक अर्थव्यवस्था की स्थिति, और खास तौर पर

हाउसहोल्ड की आर्थिक नीतियों एवं रुझानों तथा कॉर्पोरेट लीवरेज से भी उत्पन्न हुआ। इसके अतिरिक्त, इन जोखिमों का एई और ईएमडीई में भिन्न-भिन्न रूप से प्रभाव पड़ता है। एई के भीतर भी, इन जोखिमों का यूरोपीय अर्थव्यवस्थाओं पर भिन्न रूप से प्रभाव पड़ा जो सरकारी ऋण संकट से पीड़ित थे।

वर्तमान समय में, यह देखते हुए कि विश्व स्तर पर बैंकिंग प्रणाली की संभावना पर जोखिमों का भारी बोझ जारी रहने वाला है, इसलिए यह जरूरी है कि एई और ईएमडीई, दोनों, विश्व स्तर पर बैंकिंग प्रणाली के सुदृढ़ीकरण और बहाली के लिए अलग और संयुक्त रूप से कार्य करना जारी रखें। इन प्रयासों का विशेष रूप से कतिपय एई द्वारा संभावित विनियामक रोलबैक को लेकर बढ़ती चिंता के आलोक में महत्व है। बैंकों की समष्टि-विवेकपूर्ण निगरानी को सशक्त करते हुए बैंकिंग विनियामक रिफॉर्म का सतत रूप से कार्यान्वयन करने के लिए अधिक प्रतिबद्धता होनी चाहिए। तथापि, इस बदलाव की उचित रूप से जांच करने की जरूरत है ताकि विश्व स्तर

पर अर्थव्यवस्था पर बुरा असर न पड़े, विशेष रूप से तब से जब से वैश्विक वृद्धि कमजोर रही। इसके साथ ही, बैंकों की समष्टि-विवेकपूर्ण ढांचे में परिवर्तनों के बाद, विनियामक मध्यस्थता जिसकी वजह से जोखिम शैडो बैंकिंग क्षेत्र पर मंडराने लगता है, पर भी ध्यानपूर्वक नज़र रखने की जरूरत है।

आगे, वैश्विक बैंकिंग प्रणाली की भावी राह कैसी होगी, इस बात का निर्णय नीतिगत रिफॉर्म के साथ-साथ वैश्विक आर्थिक संभावना करेगी। साथ ही, विश्व स्तर पर विभिन्न दूसरी महत्वपूर्ण घटनाएं वैश्विक बैंकिंग संभावना को आकार प्रदान करेगी, जिसमें ब्रेक्सिट को अमल करना एवं वित्तीय सेवा उद्योग से जुड़े संगत दिशानिर्देश, अपारंपरिक मौद्रिक नीति से अमरीका की वापसी की गति और समय, पेरिफरल यूरोपीय अर्थव्यवस्थाओं में राजकोषीय तनाव का कुशल समाधान तथा चीन और भारत सहित अधिकांश ईएमडीई में कॉर्पोरेट डीलीवरेजिंग भी शामिल हैं।